प्रथम संस्करण—५००

जुलाई, १९९३

मूल्य : दस रुपये (१०-००)

मुद्रक :

अरविन्द प्रिंटिंग प्रेस,

चूड़ीबाजार, हैदराबाद-५०० ०१२

श्री गणेशाय नमः

श्री सरस्वतेय नमः

श्री सीता रामाय नमः

श्री शंकर पार्वतीय नमः

श्री हनुमते नमः

श्री तुलजा भवानी नमः

श्री साईं रामाय नमः

(श्री ऋषि, मुनि, सन्त, कवि एवं समस्त गुरुजन नमः)



(महाराष्ट्र की कुल स्वामिनी श्री तुलजा भवानी के चरणों में मेरी सफलता का चौथा पुष्प सप्रेम भेंट कर रहा हूँ। देवी माँ के आशीर्वाद से ही मैं इस महान कार्य को करने में आज सफल रहा हूँ।)

दो शब्द

हिन्दी के समस्त प्रेमी पाठकों से मेरा नम्र निवेदन है कि मैं अपनी पहली पुस्तक "एक फूल दस काँटे" एवं "मानवों के राम वानरों के राम" एवं "देवी चरणों में सात फूल" आपके हाथों में सौंपा था, जिसे सभी ने सराहा, उसी के उपरान्त मैंने आपकी सेवा में फिर से एक बार यह चौथी पुस्तक "गिरवी-घाटा" लघु उपन्यास प्रस्तुत कर रहा हूँ आशा है कि इसको भी आप अपना अमूल्य समय देकर प्रेम-पूर्वक पढ़ते हुए अपना सुझाव देने का कष्ट करेंगे।

दो बातें :

मैं न तो कोई बड़ा कवि हूँ न ही बड़ा लेखक। मैं तो माँ शारदा का छोटा-सा भक्त हूँ, उन्हीं के आशीर्वाद से मेरे मन में राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति जो श्रद्धा भक्ति है, उसी को देखकर सिद्धि के देवता गणेश जी को ध्यान करते हुए मैं कलम एवं सादा कागज लेकर, लिखने बैठ गया, और गुरुओं के आशीर्वाद से मेरा यह कार्य सफल हुआ।

विशेष :

इस पुस्तक का नाम एवं इसमें के पात्रों के नाम, व्यापार सभी घटनाएँ और इसकी समस्त कथावस्तु लेखक की कल्पना पर आधारित है, काल्पनिक कथा एवं पात्रों के माध्यम से सत्यता का आभास कराना मात्र है।



गिरवी-घाटा

रामू आज की रात एक पल भी नहीं सो सका था, क्योंकि उसे सीताफलों का व्यापार करने के लिए एक सौ रुपयों की सख्त जरूरत थी। वह मन में सोच रहा था कि कब दिन निकलेगा और मैं कब सेठ की दुकान पर जाऊँगा। इसी चिन्ता में वह सारी रात करवटें बदलता हुआ गुजार दिया था। आखरी समय उसे कुछ नींद लगी थी कि, प्रातःकाल छः बजे वह अचानक हड़बड़ा कर बिस्तर में उठ जाता है, उसे यह अनुमान होता है कि कहीं मैं बहुत देर तक तो नहीं सो गया हूँ ? उठते ही वह अपने पड़ोसी मित्र से समय पूछते ही, उसका मित्र अपनी घड़ी देखकर कहता है कि इस समय छः बजकर पाँच मिनट हो रहे हैं।

रामू को सेठ की दुकान खुलने का समय पहले से ही मालूम था, फिर भी वह अपने मन में यह सोच रहा था कि कहीं सेठजी की दुकान आज दस बजे की बजाय आठ बजे ही खुलेगी तो मेरा बहुत सारा काम बन जायेगा।

वह झट से चूल्हे में हाथ डालकर राख में कोयले का टुकड़ा ढूंढ़ते रहता है, उसे एक भी कोयले का टुकड़ा नहीं मिलता है, तब वहीं रामू झल्लाकर अपनी जीवन संगीनी

पत्नी केसर को जोर से पुकारता है। केसर ओ केसर अरे कहाँ मर गई हो, मुझे कुछ काम से सेठ की दुकान पर जाना है, जल्दी से मुझे मुँह धोने के लिए कोयले का एक टुकड़ा तो देती जाओ।

केसर उस समय घर के बाहर आँगन में झाड़ू लगा रही थी, अपने पति की आवाज सुनते ही घर के भीतर आकर रामू को एक कोयले का टुकड़ा लाकर हाथ में देते हुए कहती है कि लो यह कोयला और जल्दी से मुँह धोकर सेठ की दुकान को जाओ, शायद आज सेठजी जल्दी ही दुकान खोल देगा।

दो दिनों से हाथ में पूँजी नहीं होने के कारण सीताफलों की बंडी नहीं लाये, दस-बीस रुपयों की आमदनी अब तक हो जाती थी, अगर तुम मेरे कहने पर कल ही मेरे कान के फूल गिरवी रखकर सौ रुपये सेठ के पास से लाते तो इतनी परेशानी हमें आज नहीं होती, लेकिन तुमने कल मेरी बात नहीं मानी, अपने दोस्तों के भरोसे दो दिन से खाली हाथ पर हाथ धरकर ऐसे ही बैठे रहे।

घर में कुछ भी अनाज नहीं रहने के कारण, किराने वाले प्रभु सेठ के पास से बीस रुपयों का कर्ज करके उधार ले आई, कल ही सेठ उधार चावल, आटा, दाल, इमली, तेल आदि देने से पीछे हट रहा था, पहले के रुपये अब तक लाकर दी नहीं फिर आज उधार लेने सुबह-सुबह मेरा दिमाग चाटने आ गई है।

मैं कल ही बड़े मुश्किल से सेठ के हाथ पैर पड़कर दो किलों चावल, एक किलो जवारी का आटा, पाव सेर तुवर की दाल, छटाँक इमली और छटाँक तेल तुम्हारे लिए एक गणेश बिड़ी का कट्टा एवं माचीस लाई थी।

आज तो वह सेठ एक रुपये का भी मुझे उधार नहीं देगा; घर में लकड़ियाँ भी नहीं हैं, मिर्ची भी रात में समाप्त हो गई, जल्दी जाकर कहीं से भी रुपये ले आओ जिससे सीताफलों की बंडी लाकर आज तो भी माल बेचने जायेंगे तो उसमें जो कुछ भी मुनाफा मिलेगा तो घर में अनाज आयेगा, उसके साथ ही साथ प्रभु सेठ की उधारी भी दे-देंगे।

रामू को पहले से ही अपनी पत्नी केसर का स्वभाव मालूम था, वह उसे आज खाली रखकर और अधिक दुःखी नहीं करना चाहता था। इसलिए आज वह अपनी पत्नी के कहने ही उसके कानों की शोभा सुन्दर से करण फूल गिरवी रखकर लाने से पीछे हट गया, उसे आशा थी कि उसका मित्र हीरालाल जरूर उसे पूछते ही शायद उसे सौ रुपये हाथ बदल दे देगा।

उसी आशा में जब रामू अपने मित्र हीरालाल के घर गया था, जाकर हीरालाल की पत्नी से पूछते ही वह कहती है कि अभी तक गाँव से वापस नहीं आये हैं रामू भैया, क्या बात है कहिए कुछ परेशान से नजर आ रहे हो शायद आज जरूर आ जायेंगे। कुछ कहना है क्या उनसे, नहीं कुछ नहीं बस ऐसे ही मिलने आ गया था।

बेचारा रामू अपने मित्र के यहाँ बड़ी आस लगाये गया था लेकिन उसकी पत्नी को पूछते ही नहीं आने की सूचना पाते ही वह आज बड़ा निराश हो गया, क्योंकि उसे आज अपने मित्र के आने की पूरी उम्मीद थी, हीरालाल भी सीताफलों के व्यापार के लिए पास के गाँव जहाँगीरपीर गया था, दो दिन पूर्व वह कल ही वापस आने वाला था, फिर क्या कारण है कि आज तक भी वापस नहीं आ सका।

अब रामू हीरालाल के भरोसे और अधिक समय बर्बाद नहीं करना चाहता था, आज वह अपनी पत्नी केसर की बात मानकर उसके कान के करण फूल गिरवी रखकर सेठ से रुपये लाने का अन्तिम निर्णय कर लिया।

घर आकर रामू ने स्नान करके कपड़े पहनकर घर से थोड़ी ही दूरी पर एक होटल है उसमें जाकर बैठे गया, और नास्ता करने की इच्छा से अपने बुशर्ट की जेबक में हाथ डालकर अपनी जमा पूँजी को बाहर निकालकर गिनता है तो उसकी कुल पूँजी चालीस रुपये दस पैसे रहती है। वह अब अपनी जमा पूँजी को जानने के उपरान्त मन में सोचते रहता है कि क्या नास्ता करूँ, अन्त में बड़े सोच-विचार के उपरान्त एक पिलेट पूरी खाऊँगा तो उसका मूल्य डेढ़ रुपया होगा, उसके साथ ही चाय पीने पर दो रुपये अगर मैं अब खर्च कर दूँगा तो मेरे पास केवल अड़तीस रुपये ही बच जायेंगे। जब मैं सीताफलों की बंडी खरीदते समय कुछ रुपये कम पड़ जायेंगे तो फिर मैं किससे माँगूँगा। यही बात

मन में अनुमान कर बेचारा रामू अपने-आप में सोच ही रहा था कि, होटल में काम करने वाला नौकर आकर उसके सामने वाले टेबुल पर चार गिलास पानी रखते हुए पूछता है कि, बोलिये साब आपके लिए क्या लाऊँ? झट से रामू उस नौकर को एक पिलेट इटली लाने को कहते ही वह एक पिलेट इटली लाकर उसके सामने रख देता है, रामू के पेट में चूहे दौड़ रहे थे, वह इटली अपने सामने आते ही झट से चार-पाँच निवालों में ही, भूखे सिंह के समान खा बैठता है, उसके उपरान्त एक चाय मँगाकर पीता है, अब फिर से अपनी जमा पूँजी को एक बार गिनता है, उसमें से ही एक रुपया दस पैसे होटल वाले मालिक को निकालकर बिल चुका कर बाहर निकलकर पान की दुकान पर आकर दस पैसे की दो गणेश बीड़ियां खरीदकर एक बीड़ी को अपनी जेबक में रखता हुआ दूसरी बीड़ी को अपने मुँह में रखकर सामने वाले व्यक्ति से माचीस माँगकर उससे बीड़ी को सुलगाकर उसकी कसों को खिचता हुआ चिंताओं में डुबा हुआ सेठजी की दुकान तक पाँव-पाँव चलता हुआ कुछ ही देर में वहाँ तक पहुँच जाता है। वहाँ पर पहुँचने के उपरान्त एक व्यक्ति से समय पूछने पर वह व्यक्ति नौ बज रहे भैया कहते हुए रामू को उत्तर देता है।

सेठजी की दुकान के करीब आते ही रामू थोड़ी दूर से ही निगाह उठाकर सेठजी की दुकान की तरफ देखता है तब वह अभी तक बंद ही नज़र आती है, उसके मन में भ्रम पैदा होता है कि कही मैं बाजू की दुकान को तो नहीं देख रहा हूँ।

सेठ की दुकान के बिलकुल करीब आते ही उसका भ्रम दूर हो जाता है। सचमुच ही सेठजी की दुकान अभी तक बंद थी, दरवाजों पर एक नज़र डालते ही एक लम्बी सी लोहे की आड़ी पट्टी लगी हुई है, उसके दोनों बाजू और बीच में एक-एक लम्बा-सा-सूराख है उन सूराखों को दरवाजें की तीनों अकोड़ियों में बिठा कर उस पर छः मोटे-मोटे ताले लगे हुए हैं।

दुकान तो अभी तक बंद ही है। रामू थोड़ी देर तक दुकान के पास ही इन्तजार करते हुए समय काटता है। उसी समय एक युवक सायकल पर जाते हुए रामू को नज़र आते ही, उस युवक के हाथ पर घड़ी देखकर रामू उससे कितने बज रहे हैं बाबूजी कहते हुए प्रश्न करते ही वह नवयुवक अपनी घड़ी को देखकर रामू की तरफ़ मुड़ते हुए साड़े नौ बज रहे हैं भैयाजी कहते हुए जवाब देता है।

अभी सेठजी की दुकान खुलने के लिए आधे घण्टे का समय बाकी है, रामू झटसे अपने जेबक में हाथ डालकर एक बीड़ी रखी हुए बाहर निकालकर अपने मुख में रखकर सुलगाना चाहता है, लेकिन उसके पास माचिस नहीं रहती है, वह दूसरे व्यक्ति से माचिस माँगने के लिए इधर-उधर सड़क से गुजरने वाले व्यक्तियों पर नज़र डालते रहता है, तभी उसे कुछ दूरी से एक बूढ़ा व्यक्ति जिसके सर पर लाल रूमाल बाँधा हुआ है बीड़ी पिता हुआ उसके करीब ही आता हुआ नज़र आता है। वह बूढ़ा व्यक्ति जैसे ही रामू के करीब

आते ही रामू स्वयं तेजी से उस बूढ़े के करीब पहुँचकर ओ दादाजी जरा बीड़ी सुलगाने के लिए माचिस तो देना कहते ही, वह बूढ़ा व्यक्ति झट से वहीं रूककर अपनी जेब से माचिस की डिबिया बाहर निकालकर रामू के हाथ में थमा देता है।

रामू झट से उस माचिस की डिबिया को खोलकर उसमें से एक काड़ी निकालकर माचिस की पीठ पर रगड़ते ही वह काड़ी जलने लगती है, उस काड़ी की जलती हुई आग की नौ से अपने मुख में रखी हुई बीड़ी को सुलगा कर उसकी कसो को अन्दर तक खिचता हुआ फिर उसी बीड़ी का धुँआ बाहर मुख से निकालता है और वापस माचिस की डिबिया को लो दादाजी कहते हुए उस बूढ़े को देते हुए अपने ऊपर उसका बहुत बड़ा एहसान मानते हुए वापस कर देता है।

अब रामू अपनी जलती हुई बीड़ी का मजा लेते हुए अपनी मानसिक थकावट को दूर करता हुआ वही सेठजी की दुकान के सामने चबुतरे पर आलती-पालथी मारकर बड़े ही आराम के साथ बैठ जाता है। उसके मुख में की बीड़ी जैसे-जैसे जलते रहती है, वैसे-वैसे उसका धुँआ भी तेज रफतार के साथ निकलता है जैसे रेलगाड़ी को शक्तिशाली बनाने के लिए उसकी ठंडी आग में कोयला डालने पर उसको नई शक्ति प्राप्त होती है वैसे ही रामू को भी उसकी बीड़ी के जलते रहने से उसको एक नई शक्ति प्राप्त होते रहती है। वह बड़े ही मजे के साथ बीड़ी के धुएँ को अपने मुख से गोल-गोल

छल्ले बनाता हुआ बाहर निकाल कर अपनी बेचैनी को इस खेल के द्वारा दूर करते रहता है।

रामू की बीड़ी पूर्ण समाप्त होने के कुछ ही देर में, सेठजी अपने घर से बाहर निकल कर दुकान के करीब आते हैं, आते ही अपने कमर में रखी हुई चाबियों को बाहर निकाल कर, दुकान को लगाए हुए तालों को तीन इंच मोटी-मोटी और लम्बी कुंजियों के सहारे, अपने हाथों की सहायता से एक-एक कर सारे कुफलों को पाँच मिनट तक परिश्रम कर खोलते हैं।

जैसे ही ताले खोलकर उसे बाहर निकाल कर उसके पीछे की लोहे की आड़ी पट्टी को निकालने के उपरान्त फिर से उन तालों को खाली अकोड़ियों में लगा देते हैं। उसके उपरान्त दरवाजों की जंजीरों और खटकों को खोलकर दरवाजों के पटों को खोलकर उसे बल देकर मोड़ने के उपरान्त आखरी बाजू कर देते हैं।

जैसे ही दरवाजों को खोलने का काम पूर्ण होते ही, सेठजी अपने दुकान की देहलीज पर अपना सीधा हाथ रख-कर अपने भारी-भरकम शरीर को कष्ट देते हुए उसे जरा नीचे झुकाते हुए प्रणाम करने के उपरान्त, अपना सीधा पैर अन्दर डालते हुए प्रवेश करते हैं।

दुकान के अन्दर प्रवेश करते ही सेठजी झट से एक-कोने में रखी हुई झाड़ू लेकर कमरे की सफाई करने के उपरान्त अपने हाथों को सुराही में से पानी लेकर साफ करने के

उपरान्त, गिले हाथों को अपने अंगोछे से पोंछते हुए तिजोरी पर रखी हुई झटकन लेकर सबसे पहले तिजोरी के ऊपर की गर्त को झटकते हुए अपनी गद्दी और गद्दों को साफ करने के उपरान्त धम से बैठ जाते हैं। बहुत समय से थका हुआ रामू भी सेठ की दुकान में प्रवेश कर रामराम सेठजी कहता हुआ फर्श पर धीरे से बैठ जाता है।

सेठजी रामू की आवाज सुनकर भी उसको अनसुना सा कर देते हैं, क्योंकि सेठजी इस समय मातेश्वरी लक्ष्मी का जाप अपने मुख में कर रहे थे, इस कारण वह अपना मौन व्रत इस वक्त नहीं तोड़ना चाहते थे।

रामू बड़ी ही उत्सुकता भरी निगाहों से सेठजी की ओर टक-टकी लगाकर देख रहा था, जैसे कोई छोटा सा बालक अपनी माँ की ओर दूध पीने के लिए बार-बार देखते हुए कभी हँसता है, कभी रोता है और वह चाहता है कि उसकी माँ बहुत जल्द ही उस पर प्रसन्न होकर उसे अपनी गोदी में उठा ले और अपना दूध उसे पिला दे। वैसे ही रामू भी सेठजी को उत्सुकतापूर्वक देख रहा था।

सेठजी लक्ष्मी माता का जाप करते हुए, अगरबत्ती की डिबियाँ में से कुछ बत्तियों को बाहर निकालकर उसे माचिस से सुलगाकर कुछ ही क्षणों में अगरबत्तियाँ जब पूर्ण रूप से सुलग जाती है, तब उन अगरबत्तियों से जो धीमी सी आग निकल रही थी, उसकी जलती हुई आग की लौ से वह-कहीं हवा के झोंके से बुझ न जाये ऐसा मन में अनुमान करते

हुए अपने एक हाथ की हथेली का आसरा करते हुए सबसे पहले उस जलती हुई अगरबत्तियों को अपनी तिजोरी का ताला खोलकर उसके मूठ को घुमाते ही वह तिजोरी का भारी-भरकम दरवाजा खट के साथ खुल जाता है, तब अपने हाथ में की अगरबत्तियों को जो अब तक उसमें अग्नि की लौ जल रही थी उसको बुझाकर अब सिर्फ उसमें धुँआ निकल रहा था, उस धुएँ को तिजोरी के अन्दर तक पहुँचाते हैं।

कुछ क्षणों के उपरान्त सेठजी तिजोरी को अगरबत्तियों को सुगंध से प्रसन्न करने के उपरान्त उन्हीं अगरबत्तियों के धुएँ को ऊपर दीवार पर लगे हुए चित्र, भगवान श्रीराम, कृष्ण, दुर्गाभवानी, शंकर पार्वती, गणेश, लक्ष्मी, हनुमानजी आदि की फोटुओं को भी बहुत ही श्रद्धापूर्वक अगरबत्तियों के धुएँ से पूजन करने के उपरान्त, उन अगरबत्तियों को उसी फोटुओं के फ्रेम क नीचे लगाकर, फिर एक बार उन देवी देवताओं की फोटुओं की तरफ अपना मुख रखकर श्रद्धा-पूर्वक अपने दोनों हाथों को जोड़कर प्रणाम करने के उपरान्त वापस अपनी गद्दी पर बैठ जाते हैं।

रामू अब तक इधर-उधर अपनी नजर दौड़ाकर देखता है तो उसे सेठजी की दुकान में कई वस्तुएँ अलमारियों और दीवारों पर रखी हुई दिखाई देती है। सेठजी अपने पास की कुछ प्राचीन वस्तुओं को अपनी दुकान में सजाकर ऐसे सुन्दर ढंग से रखे थे, जैसे कोई डायरेक्टर अपने नगर के म्युजियम में जनता को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए सभी देशों की प्राचीन और बहुमूल्य कलाप्रिय वस्तुओं को सजाकर

रखता है। वैसे ही सेठजी भी अपनी दुकान में जो ग्राहक आता है उसको अपना वैभव दिखाने के लिए उसको अपनी ओर आकर्षित करने के लिए एक से एक पुरानी वस्तुएँ जमाकर अपने पास रखा था।

जो भी व्यक्ति सेठजी के पास आता था वह जरूर अपनी नज़रें चारों तरफ दौड़ाकर कुछ देर तक अपनी आँखों को एक ही जगह टिकाकर सेठजी की अलमारियों में रखी हुई प्राचीन वस्तुओं को बस देखते ही रह जाता था।

उन प्राचीन वस्तुओं में रामू को कई चीजें नज़र आ रही है जैसे कुछ दीवारों पर पुरानी से पुरानी अजीबो गरीब प्राचीन घड़ियाँ लगाई हुई थी, उन घड़ियों में से कुछ घड़ियाँ चल रही थी, उसके चलने की आवाज धीमी सी चाल में टक-टक-टक-टक कर स्पष्ट सुनाई दे रही थी।

दूसरी तरफ की दीवार पर नज़र डालते ही एक लम्बा सा कपड़ों को टाँगने का लकड़ी का फ्रेम टँगा हुआ रामू को दिखाई दे रहा था, उस फ्रेम पर प्राचीन काल के सिल्क और रेशम के कपड़ों से सीए हुए सेरवानियाँ और ऊन के लम्बे कोट, पालिस्टर के पैंट एवं बुशर्ट, कमीजें आदि थी, जिनको एक-एक अलग-अलग हेंगरों पर लगाकर फ्रेम के डण्डे पर टाँग दिया गया था। उससे थोड़ा हटकर दूसरी दीवार पर भी वैसा ही और एक लम्बा लकड़ी का फ्रेम था, उस फ्रेम पर भी प्राचीन और आधुनिक बनारसी सिल्क एवं पालिस्टर आदि की साड़ियों को भी घड़ी करके हेंगरों पर रखकर उसे भी

फ्रेम में टाँग दिया गया था। उन साड़ियों का रंग और आकार विभिन्न प्रकार का था, जैसे दूध के समान सफेद रंग गुलाबी, बादामी, हरी, केसरीया, पिली, निली, नासी, जामुनी आदि सुन्दर से सुन्दर रंग बिरंगी एवं छपवाई और जिगजाग और कारचूबी का काम की हुई ये सभी साड़ियाँ थी।

उससे थोड़ा हटकर तीसरी दीवार पर अपनी निगाह डालते ही रामू को और एक फ्रेम पर प्राचीन और आधुनिक डिजाइनों में सिये हुए रंग-बिरंगे आकारों की जाकिटें लटकी हुई नजर आ रही थी।

दरवाजों के ऊपरी भाग की दीवारों पर प्राचीन से प्राचीन नक्शेदार पीतल, सिल्वर एवं चाँदी के मूठों से बनाई हुई अजीबों-गरीब डिजाइनों में बनाई हुई, बूढ़े लोगों के जीवन का आखरी सहारा कहलाने वाली, हाथों में पकड़कर अपनी आनबान प्रदर्शित करने वाली कुछ दस बारह छड़ियों को भी दीवार पर लम्बे-लम्बे किलों को मार कर इन छड़ियों को एक-एक कर अलग-अलग दीवार से चिपका कर रख दिया गया था।

सेठजी के बैठने का जो आसन था, वह जमीन से करीब एक फूट ऊँचा, छः फूट लम्बा, चार फूट चौड़ा-सा एक चबूतरा था, उसी पर साबाद के पत्थर बिछे हुए थे, उन पत्थरों पर एक पुरानी लाल रंग की मोटी-सी सतरंजी बिछाई हुई थी, उसी सतरंजी के ऊपर एक मोटे से कपड़े की सफेद चादर बिछाई गई थी, उसी पर सेठ जी आराम से बैठने एवं थकावट के समय विश्राम करने के उद्देश्य से, अपने

शरीर को अधिक कष्ट न पहुँचे इसको ध्यान में रख कर उन्होंने एक दो फीट ऊँची एवं तीन फीट चौड़ी एक फीट मोटी-सी रूई की मदत से बनाई हुई सफेद तकिया को अपनी पीठ का टेका देने के लिए रख लिया था, उसी तकिया के दोनों बाजू में अपने हाथों अथवा पैरों को आराम पहुँचाने को दृष्टि में रख कर गोल एव लम्बे रूई के ही बनाये हुए दो गोल तकियों को बनवा कर उसी चबूतरे पर रखा था, जिस पर सेठ जी कभी-कभी अपने हाथों को टेक कर आराम करते थे।

उनके पीठ के पीछे ही उसी चबूतरे पर नज़र पड़ते ही एक मजबूत एवं मोटी, लोहे की बनाई हुई भारी और भरकम तिजोरी रामू को नज़र आ रही थी, वह तीन फूट चौड़ी चार फीट लम्बी करीब एक सौ किलो वजन की पुराने जमाने की तिजोरी थी, उसको खोलने के लिए एक मजबूत मूठ थी जो पीतल की थी, उस मूठ से कुछ ही दूरी पर उसको एक चाबी लगाने का घर नज़र आ रहा था, उसके सुराख पर एक चाँद से आकर का गोलनुमा पीतल का ही बिल्ला ढँका हुआ था, जिसको अपनी सुविधा अनुसार सेठजी तिजोरी खोलने के समय इधर-उधर हटाकर चाबी की सहायता से उसको खोलते रहते हैं।

सेठजी के दायें हाथ की तरफ एक छ फीट लम्बी एवं आठ फीट चौड़ी दीवार थी, उस दीवार के ऊपर एक लकड़ी की बनाई हुई मजबूत अलमारी थी जिसमें सेठ अपने ढेर सारे बहीखाते एवं रसीद बुक और न जाने क्या-क्या रखे थे। ये

वही जाने, उस अलमारी के ऊपरी भाग पर काँच के दरवाजें थे उसको भी मोटा ताला लगाकर रखा गया था।

सेठजी के बायें हाथ की तरफ एक और लकड़ी की बनाई हुई छ फीट लम्बी पाँच फीट चौड़ी अलमारी थी, उसको जमीन से तीन फीट ऊपर दीवार में लकड़ी के गट्ठे मारकर फीट किया गया था, ऊपर के भाग में आइनों के दरवाजें थे जिसको सुविधा अनुसार इधर-उधर ढकेला जा सकता था, उन आइनों के भीतर हाथ की घड़ियाँ नई और पुरानी रखी हुई थी, वैसे ही टेबुल पर रखने की टाईम पीस घड़ियाँ भी आधुनिक एवं प्राचीन कई आकारों एवं विभिन्न रंग रूपों में थी।

उसके ऊपरी खाने में प्राचीन एवं आधुनिक चाँदी, तांबा एवं पीतल के देश-विदेश के सिक्के एक के बाजू एक जमा कर काँच की तस्तरीं में रखे हुए थे। कुछ सफेद चीनी और काँच की बनाई हुई रंग-बिरंगी सुन्दर से आकार की गुड़ियाँ एवं कप-सासर प्लेट आदि भी थे। कुछ पीतल, तांबा, सिल्वर आदि धातू की मूर्तियाँ भी रखी हुई थीं। उन सब वस्तुओं को एक बार गौर से देखने पर ऐसा अनुमान होता था कि, इस सेठजी का व्यापार बहुत प्राचीन काल से चला आ रहा है, शायद इस सेठजी से पहले उनके परिवार में उनके पिता एवं दादाजी भी यही व्यापार करते आ रहे हैं।

कुछ भी हो वर्तमान सेठने उन सभी वस्तुओं को अपनी दुकान में बड़े ही सुन्दर ढंग से सजाकर रखा था। जैसे कोई

कला प्रेमी रईस राजा अथवा महाराजा लोग अपने खानदान की शान एवं अपना वर्चस्व प्रदर्शित करने के लिए, अपनी आन-बान शान-शौकत बनाये रखने के लिए कई देशों में बनाई हुई उत्तम कोटि के कलाकारों की कल्पना को अपने धन के सहारे खरीदकर अपने-अपने राजमहलों की अलमारियों में सजाकर रखते थे। जिससे हर एक आने वाले नये व्यक्ति को यह अनुमान हो कि यह लोग तो बहुत धनवान है। इनके पास तो काफी ठाट-बाट की वस्तुएँ हैं उसी प्रकार सेठजी भी अपना वैभव दिखाने के लिए अपनी दुकान में सभी वस्तुओं को बहुत ही सलिके से हर एक स्थान पर सजाकर रखे थे। जो भी व्यक्ति उस दुकान में प्रवेश करता था वह जरूर कुछ समय के लिए अपनी आँखों को चारों तरफ दौड़ाकर कुछ देर तक टक-टकी लगाये बस देखते ही रहता था, और स्वयं अपने आप को कुछ देर के लिए भूलकर उन प्राचीन वस्तुओं को गौर से देखते हुए अपने मन में यह अनुमान लगाता था कि, ये सभी वस्तुएँ कितने साल पुरानी होगी। इन सबको सेठजी ने कैसे इकट्ठा किया होगा? इन सबका मूल्य कितना होगा, क्या सेठजी इन वस्तुओं को भी ग्राहक के कहने पर मूल्य लेकर बेचते होंगे, बस यही प्रश्नों का उत्तर वह अपने मन में करते हुए कुछ वस्तुओं को स्वयं भी खरीदकर अपने घर में भी ऐसा ही सजाकर रखने की कल्पना करते रह जाता था।

रामू की नज़र उस लकड़ी की अलमारी के नीचे पड़ते ही क्या देखता है कि, वहाँ पर रखी हुई वस्तुओं में अधिकतर

लोहे की बनी हुई पुरानी वस्तुएँ हैं। जैसे लोहे का घन, जिसका वजन करीब दो किलों का है, वैसे ही तीन-चार छोटे-बड़े लोहे के हथौड़े जमीन खोदने के सब्बल आदि वस्तुएँ रखी हुई थी।

उधर दीवार के दूसरे बाजू सेठजी की गद्दी के बायें हाथ के बाजू फर्श पर कई पीतल के बर्तन रखे हुए हैं जैसे पीतल के पुराने और नये घड़े, पीतल की ही परातें, भगोने, बकिटें, लोटे आदि थे।

कुछ ही देर में एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति सेठजी की दुकान में प्रवेश कर दरवाजें के एक बाजू लकड़ी के स्टूल पर रामराम सेठजी कहता हुआ बैठ जाता है। सेठजी अपनी तरफ से भी बड़े ही धीमे स्वर में रामराम कहते हैं। और कुछ ही क्षणों के उपरान्त उस आने वाले नये आगन्तुक से प्रसन्न होकर कहते हैं कि हाँ, आ गया है तू ? मैं तेरा ही इन्तजार कर रहा था। तू उसी स्टूल पर बैठा रह मैं और एक स्टूल तुझे देता हूँ, उसे अपने सामने रख ले कहते हुए सेठजी अपने बाजू रखे हुए स्टूल को उस स्थान से उठाकर उस व्यक्ति के सामने लाकर रखने के उपरान्त, अपने तिजोरी का भारी-भरकम दरवाजा खोलकर उसमें रखा हुआ एक पीतल का छोटा सा गोल आकार वाला डब्बा निकालकर उस व्यक्ति के सामने लाकर रख देते हैं। उस पीतल के डिब्बे में दस-बारह कुछ पुरानी और नई घडियाँ रखी हुई हैं उन घड़ियों को एक एक कर गिनने के उपरान्त सेठजी उसमें से छः घड़ियाँ निकाल कर उस व्यक्ति के हाथ में बनाने के लिए सौंप देते हैं, जिसे

वह मेकानिक लेकर उन्हें दुरूस्त करने के लिए स्टूल पर जाकर बनाते हुए बैठ जाता है।

वह घड़ीसाज झट से अपने बस्ते में से कुछ सामान बाहर निकालकर उसे टेबुल पर जमाकर रख देता है, उसके उपरांत एक काँच के कटोरे में सेठजी की दी हुई छः घड़ियों को उस काँच के कटोरे में रख देता है। उसके उपरान्त अपने बस्ते में से ही एक छोटा सा चौकोनी टीन का सुन्दर सा डब्बा बाहर निकालकर उसको खोलता है, उसमें से सबसे पहले एक आईने में मढ़ी हुई गोलनुमा आँख पर चिपकाने के लिए आँख की टोपन को निकालकर वह अपनी सीधी आँख पर लगा लेता है। इसके बाद उन घड़ियों में से एक घड़ी को अपने हाथ में लेकर उसको पलटाकर बायें हाथ में रख लेता है, और अपने सीधे हाथ में एक छोटा सा चिमटा लेकर उसकी नोकों के सहारे उस घड़ी के पिछले भाग में जो ढक्कन लगा हुआ था, उसके छोटे से गालों में उस चिमटे को बिठाकर कुछ देर तक गोल पेच घुमाते ही वह ढक्कन पूर्ण रूप से खुल जाता है, उसके खुलते ही अपने हाथ में के चिमटे को नीचे रखकर अपने सीधे हाथ की उँगलियों की सहायता से उस घड़ी के ढक्कन को धीरे से बाहर निकाल लेता है, उस ढक्कन को निकालते ही हमें घड़ी की छोटी-सी मशीन नज़र आती है, वह इस समय बंद थी, क्योंकि उसके कुछ पुर्जे इस समय खराब हो गये थे, झट से वह घड़ी साज अपने दिमाग की घड़ी पर जोर देकर एक छोटे से औजार के सहारे कुछ ढीले हुए स्क्रूओं को फीट करते ही उस घड़ी के चक्र धीमी

गति से धड़कन में आ जा जाते हैं, उसे और थोड़ा टाईट करते ही वह चक्र तेजगति से चलने लगते हैं, तभी घड़ीसाज अपनी कला की सूझबूझ पर प्रसन्न हो जाता है, लेकिन कुछ देर चलते ही वह घड़ी फिर रूक जाती है, तभी वह घड़ी साज झट से अपने चिमटे के सहारे स्प्रींग को जो टूटा हुआ था उसको बाहर निकाल कर दूसरा स्प्रींग अपनी डिबियाँ में से नया निकाल कर बिठाते ही वह घड़ी फिर से चल पड़ती है, तभी झट से थोड़ा सा तेल उस घड़ी के मशीन में छोड़कर उस पर ब्रश मारते ही वह स्वच्छ होकर और तेज गति से चल पड़ती है, अब वह सन्तोष के साथ अपने हाथ की घड़ी का समय देखकर उस घड़ी को मिलाकर अपने सामने रख लेता है। जैसे कोई दस वर्ष का बच्चा तेज दौड़ते हुए अपने स्कूल के मैदान में पहुँच जाता है, वैसे ही यह बंद घड़ी जब चलने लगती है तब कुछ देर तक उसकी सहीं चाल पर उसे सन्तोष होते ही उस घड़ी को फिर अपने हाथ से उठाकर उसको अपने मुख से एक बार फूँकता हुआ ब्रश से फिर से साफ करने के उपरान्त वापस घड़ी को डायल में मशीन को बिठाकर ढक्कन को गोल चिमटे से घुमाकर गाले में टाईट बिठाने के उपरान्त उस घड़ी को हाथ में सीधा करके एक पीले रंग के मुलायम कपड़े से उस घड़ी के आईने को साफ करके उसको अपने सामने के काँच के कटोरे में रखकर संतोष की साँस लेता है।

कुछ समय के उपरान्त वह घड़ीसाज अपने सामने रखी हुई घड़ी को फिर से अपने हाथ में लेकर, उसके काँटों को

चूमाकर अपने दायें हाथ की कलाई पर बँधी हुई घड़ी का समय देखते ही उस घड़ी में इस समय ग्यारह बज रहे थे, उसी समय से अभी रिपेर की हुई घड़ी को भी ठीक ग्यारह बजे का समय मिलाकर उसे फिरसे वही सामने रखी हुई काँच की तस्तरी में रख देता है, उसके उपरान्त अपनी सीधे आँख के ऊपर लगाई हुई काँच की गोल टोप को थोड़ी देर के लिए निकालकर उसे भी सामने टेबुल पर एक बाजू रख देता है ।

करीब एक घण्टे से वह टोप आँख पर चिपकाकर रखने के कारण उसकी आँख थकी सी महसूस हो रही थी, उसके कारण अपनी आँख के कष्ट से राहत पाने के उद्देश्य से वह टोप को बाहर निकालते ही अपने हाथ से धीरे से आँख को सहलाकर कुछ देर तक अपनी आँख को बंद रखने के उपरांत, पुनः कुछ क्षणों में ही आँख को फिर से खोलते ही उसको बहुत आराम का अनुभव होता है ।

अब फिर से वह एक नई स्फूर्ति महसूस करता हुआ वही सामने रखी हुई घड़ी को अपने हाथ में लेकर अपने मांडियों पर बिछाई हुई घड़ो साफ करने का कपड़ा उठाकर उस घड़ी को फिर से साफ कर, इस प्रकार से एक घण्टे की कड़ी मेहतन के द्वारा एक घड़ी तैयार हो जाती है, अभी और उसके सामने पाँच घड़ियाँ बनाने की रखी हुई एक पहाड़ के समान नज़र आती है, अब कौन-सी घड़ी को हाथ में ले इन्हीं विचारों में वह खोया-सा रहता है, कि झट से उसका ख्याल अपने बुशर्ट की जेब पर पड़ते ही, वह अपने सीधे हाथ को बांई

ओर के जेबक में डालकर उसमें रखी हुई चारमीनार सिगरेट की पाकेट एवं ऊँटछाप माचिस बाक्स बाहर निकाल कर उसमें से एक सिगरेट लेकर उसको अपने मुख में रखकर बड़े ही चाव के साथ माचीस की पीठ पर एक काड़ी को रगड़कर उसकी आँच से अपने मुख में रखे हुए सिगरेट को सुलगाते हुए उसके धुएँ को अपने मुख में खिचकर फिर से जब सिगरेट लाल आकार की हो जाती है, तब सिगरेट को अपने मुख से बाहर निकाल कर हाथ की उँगलियों में थामते हुए अपने मुख के भीतर खींचें हुए कसों को गोल-गोल छल्ले बनाता हुआ एक जादूगर के समान धुएँ का प्रदर्शन करता है।

उस सिगरेट के पीते ही उस घड़ीसाज के शरीर में जो एक थकावट-सी आ गई थी वह गायब हो जाती है, अब वह पुन: रेलगाड़ी के इंजन के समान शक्तिशाली बनकर बड़े फूर्ति के साथ, अपने सामने रखी हुई पाँचों घड़ियों में से एक घड़ी हाथ में लेकर बनाने लग जाता है, इस घड़ी को बनाते समय उसको अपने घर की याद ताजा हो जाती है, उसके ताजा होते ही वह सोचने लगता है कि बाकी की चारों घड़ियों को भी जल्दी बनाकर, उसके उपरांत सेठजी से आज की मजदूरी तीस रुपये लेकर अपने घर को कम से कम चार बजे तक चला जाऊँगा। इसी कल्पना में वह तेजी के साथ अपने दिमाग की घड़ी को दौड़ाते हुए एक-एक कर सभी घड़ियों को चार बजे तक बनाकर सेठजी को सौंप दूंगा और उनसे अपनी मजूरी लेकर घर को ऐसे चल पड़ूंगा जैसे एक्सप्रेस रेलगाड़ी अपने स्टेशन से छूटते ही ठीक समय पर मंजिल पर

पहुँच कर ही दम लेती है। वैसे ही मैं भी अपने घर जाकर आज की मजूरी के तीस रुपये अपनी पत्नी को सौंप दूँगा तब वह घर में जो वस्तुएँ समाप्त हो गई है बाजार से लाकर बनाएगी, इसी कल्पना में वह डूबा हुआ रहता है।

इधर रामू बहुत देर से इंतजार कर रहा था, उसे आये करीब दो घण्टे हो गये थे, अब उससे अधिक रहा नहीं गया उसने थोड़ा धैर्य करके सेठजी से कहने लगा, सेठजी मुझे थोड़ा जल्दी भेज दीजिए, मुझे यहाँ से फिर मंडी जाना है, देर हो गई तो मंडी में माल नहीं मिलेगा।

रामू की बातों को सुनते हुए सेठजी कहने लगे--अरे ठैर ना जरा, कौन-सी देर हुई है तुझे आये। हाँ, बोल क्या लाया है आज, अभी तो पन्द्रह दिन पहले ही दो सौ रुपये ले गया था मेरे यहाँ से, क्या वह सबके सब खा गया है ? फिर आज सुबह-सुबह चले आया है मेरे यहाँ, क्या मेरे पास भी हरदम तिजोरी में रुपये धरे रहते हैं, तू आते ही तुझे थमा दूँ, कोई आसामी अपनी चीजें छुड़ाने वाला आयेगा तो मैं उससे लेकर तुझे दूँगा, समझा ना मेरा इशारा क्या नहीं समझा अभी मेरी बात को हाँ, बोल क्या लाया है, कान के आधे तोले के करणफूल लाया हूँ सेठजी। क्या करूँ दो दिनों से मेरा छोटा-मोटा धन्दा बन्द पड़ा है, खाने के लिए भी घर में बहुत तकलीफ हो रही है। हाथ में बराबर पूंजी नहीं होने के कारण मंडी को जाकर सीताफलों की बंडी खरीद कर नहीं ला सका। मेरे दोस्त हीरालाल के भरोसे हाथ पर हाथ धर कर दो दिनों से फिजूल बैठा रहा, अगर दो दिन पहले

ही आपके पास आता तो मेरा कितना काम बन जाता था, कम से कम आज तो भी आपकी दया जल्दी हो जायेगी तो मेरा बिगड़ा काम सुधर जायेगा सेठजी।

कुछ ही देर में एक बूढ़ा-सा व्यक्ति जिसकी उम्र कोई साठ वर्ष करीब होगी। उसके साथ ही उसकी पत्नी भी है, पत्नी की उम्र कोई पचास वर्ष होगी। बूढ़े की वेशभूषा से वह एक गरीब परिवार का व्यक्ति नजर आ रहा है। वह धोती कुर्ता पहना हुआ है, सफेद रंग की एक मोटी एवं मैली-सी धोती है, उस पर एक हरे रंग का आधे अस्तीनों वाला, कुर्ता पहना हुआ है। सर पर लाल रंग का रूमाल बाँधा हुआ है। मुख पर नज़र पड़ते ही, उसकी बड़ी-बड़ी मूछें विराजमान है, मूछे तो एकदम सफेद हंस के समान है, लेकिन उसकी कमर कमजोर होने के कारण थोड़ा-सा झुका हुआ सा है। चेहरे पर उदासी छाई हुई है।

उसकी पत्नी भी उसके साथ ही मिलकर सेठजी के यहाँ आई है, उसके शरीर पर मोटी-सी लाल रंग की साड़ी विराजमान है, ऊपरी भाग पर हरे रंग की छींट की बनाई लम्बे अस्तिनों वाली चोली पहनी हुई है। उसका चेहरा मुरझाया हुआ है। सर के बाल कुछ काले और सफेद रंग के है। वह बुढ़िया अपने पति के संग मिलकर आपस में कुछ विचार-विनिमय कर रहे हैं, शायद वह दोनों अपनी कोई वस्तु को सेठ के पास से छुड़वाने के लिए आयें हैं, और उसी के विषय में आपस में अपनी मातृभाषा में घुसूर-पुसूर कर रहे हैं।

झट से जैसे ही सेठजी की निगाह इन नये ग्राहकों पर पड़ते ही हँसते हुए प्रश्न करते हैं कि किधर आया रे मैसैया? तुम्हारे पास ही अपनी चीज छुड़वाने आया हूँ सेठजी, कहते हुए मैसैया अपनी पत्नी की थैली में से एक गुलाबी रंग की पुरानी सी चिट्ठी को बाहर निकालकर सेठजी के हाथ में थमा देता है :

सेठजी उस चिट्ठी को लेकर उसकी तारीख महिना वर्ष आदि देखने के उपरान्त, अपने बहीखाते को भी खोलकर उससे उसको मिलाकर दोनों को सही पाने के उपरान्त ही, अब उसकी असल रकम और सूद को जोड़कर, मैसैया और उसकी पत्नी नरसम्मा से कहते हैं कि, देड़ सौ रुपयों में अपने गले के मनके गिरवी रखकर ले गई थी, उन मनकों को गिरवी रखे एक साल दस दीन हो गये हैं। उसका सूद पाँच रुपये सैकड़ा के हिसाब से, मिलाकर दो सौ पैंतालीस रुपये हुए हैं।

जैसे ही सेठजी के मुख से असल और सूद की रकम मिलाकर दो सौ पैंतालीस रुपये सुनते ही मैसैया की पत्नी चकित होकर अपने पति का चेहरा देखते हुए पति से प्रश्न करती है कि एकदम पाँच कम सौ रुपये मित्ती कैसे हो गई है? मैं तो अपने मनके सेठजी के पास गिरवी रखकर एक साल भी पूरा नहीं हुआ है, फिर इतना अधिक सूद कैसे हो गया है, वह दोनों पति-पत्नी आपस में विचार-विनिमय करते हुए परेशान हो रहे थे। अब तक जो खाली बैठे हुए थे झट से मैसैया और उसकी पत्नी फर्श पर आराम से बैठकर अपनी

थैली में के रुपयों को बाहर निकालकर दोनों पति-पत्नी मिल-कर आपस में गिनते हैं तब उनके पास टोटल रकम दो सौ चालीस रुपये ही रहते हैं।

रुपयों को गिनने के उपरान्त मैसैया थोड़ा धैर्य करके सेठजी से प्रश्न करके पूछता है, सेठजी अभी मैं अपनी पत्नी के मनकों को गिरवो रख कर आपके यहाँ ग्यारह महीने पन्द्रह-सोलह दिन ही हो रहे हैं, फिर आप किस प्रकार हिसाब लगा रहे हैं। वह मेरे समझ में नहीं आ रहा है ?

मैसैया की बातों को सुनने के उपरान्त सेठजी कहने लगे अरे मैसैया तू कब से हिसाब लगा रहा है। मैं जब से आपके पास अपनी चीज गिरवी रख कर गया था, तभी से हिसाब लगाया हूँ, सेठजी।

अरे कब से हिसाब लगाया है, रखते समय अपनी वस्तुओं को मेरे हाथ-पैर पड़के गिड़-गिड़ाते हुए खुशी-खुशी रुपये ले जाकर अपना काम निकाल लेते हैं, जब काम पूरा हो जाता है, तब वापस रकम देकर अपनी वस्तु को ले जाते समय आँखों में पानी आता है, इन लोगों को रकम देना ही गुनाह है।

सेठजी की बातों को सुन कर मैसैया थोड़ा परेशान होकर कहने लगता नहीं सेठजी इतना नाराज क्यों होते हो, मैं तो अपनी रकम की इतनी अधिक सूद कैसे हो गई है बस वही पूछ रहा था, आप तो बेकार ही इतना गरम हो रहे हैं।

गरम नहीं तो और क्या होऊँगा सुबह-सुबह बोहनी के टाईम पर आते ही किट-किट कर रहा है। हिसाब तो आता-जाता नहीं खुद का भी समय बर्बाद कर रहा है, उल्टा मेरा दिमाग खराब करने पर तुला हुआ है।

चल तू ही बता कितने महीने हुए हैं ? तुझे अपने मनके मेरे यहाँ गिरवी रख कर। सेठजी मैं अपने मनके युगादि से दो दिन पहले आपके पास गिरवी रखा था, अभी युगादि का त्योहार तो सत्रह दिन दूर है, फिर किस प्रकार एक साल दस दिन हुए हैं जरा आप ही बताइए सेठजी ?

अरे मैसैया मैं तुझे रखते समय ही बोला था, देख हमारा हिसाब साहूकारी होता है, वह हमारी पंचांग के अनुसार पूर्णिमा और अमावश्या से जोड़ते हैं - हम अंग्रेजी कैलेंडर अथवा अंग्रेजी तारीख या त्योहारों से नहीं देखते हैं, हाँ, ला कितने रुपये इस समय लाई है तेरी औरत।

सेठजी के पूछते ही नरसम्मा झट से अपनी थैली में रखे हुए दो सौ पैंतीस रुपयों को सेठजी के हाथों में थमा देती है। सेठजी झट उन रुपयों को लेकर माता लक्ष्मी का नाम मन में स्मरण करके उन रुपयों की गिनती करते हुए वापस मैसैया से प्रश्न करते है कि अरे इसमें तो अभी दस रुपये कम है, ला अभी दस रुपये और दे दे क्यों मेरा समय बर्बाद कर रहा है।

सेठजी की बातों को सुनने के उपरान्त दोनों पति-पत्नी सेठजी से कहते हैं कि, क्या सेठजी वह रुपये हमारे हिसाब से तो बराबर ही है कुछ भी कम नहीं है।

नहीं-नहीं मैं तो सुबह-सुबह एक पैसा भी कम नहीं लूँगा, यह तो मेरे बोहनी का समय है, नहीं तो यह तेरे रुपये वापस ले ले मुझे और बहुत सारा काम पड़ा है करने का ।

सेठजी की नाराजगी को देखते हुए नरसम्मा अन्त में अपनी थैली में बचा कर रखे हुए घर के खर्च के लिए पाँच रुपयों की नोट को भी उदास मन से सेठजी के हाथों में थमा देती है ।

तब सेठजी नरसम्मा के हाथ से पाँच रुपयों की नोट को लेते हुए फिर थोड़ा अकड़ते हुए कहते हैं कि, अरे यह क्या है रे मैसैया फिर पाँच कम दे रही है तेरी औरत, मैं तो एक पैसा भी कम नहीं लूँगा कह कर पहले ही कह चुका हूँ ।

तब मैसैया भी खीजकर कहता है, क्या...सेठजी सिर्फ पाँच रुपये ही कम है ना ? ऊपर के दस दिनों का हिसाब अगर निकाल दिये तो, ओ बराबर ही है, लिये तो लेव सेठ नहीं तो जाने देव सेठजी अब हमारे पास एक रुपया भी नहीं बचा है ।

मैसैया के नाराज़ होते ही सेठजी जरा अब की बार दब गये और बड़े उदारता पूर्वक कहने लगे, अच्छा जा वहीं पर बैठ जा अभी मैं तेरी पत्नी के मनकों का हार ढूंढ़ कर लाता हूँ, ज्यादा बक-बक मत कर ।

दुकान के भीतर घर में जाने के लिए सेठजी ने झट से अपनी धर्मपत्नी जी को आवाज लगाई, अरे राधा ओ राधा जरा इधर दुकान में आओ थोड़ी देर के लिए, सेठजी इस

प्रकार दो-तीन बार अपनी पत्नी को लगातार बुलाने पर तब कहीं, अन्तिम बार की ध्वनि सेठानीजी के कान में जाकर पड़ी तब कहीं सेठानीजो सेठ के ऊपर भूखी सिंहनी के समान गरजते हुए घर में से दुकान की तरफ आते ही कहने लगी क्या है क्यों बार-बार चिल्ला रहे हो, क्या बिजली टूट पड़ी है अथवा कोई बड़ो मुसीबत तुम पर आ पड़ी, क्यों बार-बार चिल्लाये जा रहे हो, हाँ कहो क्या बात है ।

सेठानीजी का क्रोध शान्त होने के उपरान्त ही सेठजी ने भिगी बिल्ली के समान दबते हुए धीमी आवाज में कहने लगे ग्राहकों को आये कोई एक घण्टा बीत गया है, इनकी चीजें घर में से ढूँढ़ कर लाना है, बच्चों का कितनी देर से रास्ता देख रहा हूँ, रमा और भगत भी नहीं है, फिर किनके भरोसे मैं इस दुकान को छोड़कर जाऊँ इसलिए तुझे बुलाया है, तू थोड़ी देर तक दुकान में बैठ जा मैं अभी आता हूँ । इस प्रकार सेठजी अपनी पत्नी को दुकान की जिम्मेदारी सौंप कर घर में प्रवेश करते समय दुकान के ही एक बाजू से जो रास्ता है उसमें प्रवेश करते समय छीट के परदे को थोड़ा बाजू हटाकर अन्दर चले जाते है, उस समय दुकान में बैठे हुए ग्राहकों की निगाह भी कुछ देर के लिए सेठजी के पीछे टिक जाती है । उस समय वह लोग अपनी आँखों से रामू, मैसैया और उसकी पत्नी नरसम्मा आदि को अन्दर रखी हुई कई वस्तुओं को देखते रहते है कि किस प्रकार ढेर सारी वस्तुएँ पीतल, तांबा, स्टील आदि के घड़े, बकिटें, परातें, भगोनें, थालियाँ, टिफिनें, लोटे आदि रखे हुए हैं ।

सेठजी के घर में प्रवेश करते समय सेठानीजी सेठजी की गद्दी पर बैठ जाती है, और अपने दोनों पैरों को फर्श पर रखती है, उस समय सेठानीजी के चेहरे पर रामू, मैसैया एवं नरसम्मा की निगाह टीक जाती है, सेठानीजी की आयु कोई पैंतालीस वर्ष होगी शरीर से हृष्ट-पृष्ट है, रंग एकदम गोरा, सर के बाल एकदम काले गोल चेहरा माथे पर लाल रंग की चौड़ी बिंदिया चिपकी हुई है। वह इस समय बहुत ही सुन्दर दिखाई दे रही है। जैसे आकाश के बीचो-बीच चन्द्रमा पूर्णिमा के दिन सम्पूर्ण सोलह कलाओं में विकसित हो कर सारी दुनिया के आकर्षण को अपनी ओर समेट लेता है।

वैसे ही इस समय सेठानी राधाजी अपने चेहरे पर लगाई हुई उस लाल रंग की बिंदियाँ के कारण इस समय रामू, मैसैया और नरसम्मा के मन को आकर्षित कर रही है।

सेठानी राधाजी की सुन्दरता में चार चाँद लगा रहे हैं उनके कानों में पहने हुए सुन्दर से जड़ाऊ कर्ण फूल और झुमके, कानों में कंबलों की शोभा है तो उससे भी सुन्दर गले में चार लड़ों की आठ-दस तोले की जंजीर जो सूर्य की किरणों के समान अपनी सुन्दरता प्रकट कर रही है, दोनों हाथों में जड़ाऊ कंगन पाँवों में चाँदी की छड़े, कमर में सोनें का कड़दोना नीचे तक लटक रहा है, दोनों हाथों की दो-दो अँगुलियों में दो-दो सुन्दर अँगुठियाँ विराजमान है।

सेठानी राधाजी का जैसा सुन्दर रूप रंग है वैसे ही उनके शरीर पर सुन्दर से सुन्दर कपड़े भी हैं गुलाबी रंग की फूलों

वाली पालिस्टर की साड़ी वैसे ही रंग की जाकिट, पहने हुए हैं, चेहरे पर पाउडर लगाई हुई है, हाथों में मेंहदी, होंठों पर लाल लिपस्टिक नाखूनों पर पेंट, बालों में महकती हुई सुगंधी तेल की खुशबू उन बालों के बीचो-बीच में सोने की जंजीर में लटकती हुई सोने की टिकिया।

सेठानी राधाजी का चेहरा जितना सुन्दर है उतना ही सुन्दर उनका बैठने का ढंग एवं चेहरे की मुस्कान, उनकी सुन्दरता में वृद्धि कर रही है। उनके मुख में का पान, मुख के भीतर मीठे पान को ऐसे चबाकर खा रही जिसके रस के द्वारा सेठानो राधारानी के बत्तीसों दाँत लाल रंग के हो गये हैं। उनके सुखे हुए दोनों होंठ भी पान के मुख में चबाने से उसका रस ओंठों को भी गिला कर रहा है, उनके चेहरे की आभा इस समय ऐसी दिखाई दे रही है जैसे यह किसी स्त्री के कोमल ओंठ नहीं है बल्कि किसी सुन्दर तोते की लाल रंग की चोंच है। इन्हीं लाल रंग के ओंठों के कारण राधारानी का रूप सौंदर्य और अधिक उभार पर आ रहा है।

सेठानीजी के सामने अब तक रामू और मैसैया एवं नरसम्मा ही बैठे हुए थे, उनमें और एक नया व्यक्ति कमरे में प्रवेश करता है, उसकी उम्र कोई चालीस वर्ष के लगभग होगी, वह बहुत ही जल्दी में दिखाई दे रहा है, उसकी वेष-भूषा से वह फेसनेबुल नज़र आ रहा है, उसके शरीर पर पालिस्टर का पैंट बूशर्ट है हाथ पर घड़ी बाँधा हुआ है, चेहरे पर मुस्कान है, मुख में पान रखा हुआ है जिसे वह चबाकर उसका मजा ले रहा है, थोड़ा-सा नशे में भी नज़र आ रहा

है, वह बहुत जल्दी में होने के कारण सेठानीजी से थोड़ा साहस करते हुए अपने मन की पीड़ा को व्यक्त करते हुये पूछ बैठता क्या बात है सेठानीजी सेठजी को अन्दर गये काफी समय हो गया अभी तक नहीं आये हैं ? थोड़ा उन्हें आवाज लगाकर बाहर बुलाओं ना सेठानीजी कहकर कहता है। जैसे ही नया ग्राहक सेठजी को जल्दी बुलाने के लिए सेठानीजी से कहते ही वह थोड़ा खीजकर जवाब देती है, ठैर ना क्या लाया है ? ये गिलास, डब्बे पानदान, उगालदान आदि छोटी-छोटी चीजें कहाँ रखेंगे ? आते हीच गड़बड़ करते हैं सेठ क्या मेरा काम करने गये हैं, ओ तो तुम्हारा हीच काम कर रहे हैं। इस प्रकार सेठानीजी अपना चेहरा लाल करती हुई अपने क्रोध को प्रकट करती हुई जवाब देती है।

सेठानीजी के इस प्रकार डाँटते ही वह व्यक्ति जो गड़बड़ कर रहा था, अब एकदम शान्त हो जाता है, और सेठानीजी को शांत करने के लिए कहने लगता है, अच्छा सेठानीजी मुझे अब माफ कर दो। अब मैं आपको आगे कुछ नहीं कहूँगा। इस प्रकार अपनी गलती को स्वीकार करते हुए अपने चेहरे पर गम्भीरता लाते हुए थककर नीचे फर्श पर बैठ जाता है।

उतने में स्वयं सेठजी अन्दर के कमरे से मनकों का हार लाकर, उस पर बाँधी हुए कागज की चिट्ठी को कैंची से उसकी डोरी काँटकर उस चिट्ठी को खोलकर, उस पर मैसैया की चीज़ मैसैया को पहुँचे जैसा उसका अँगूठा लगवाकर उस मनकों के हार को उसे सौंप देते हैं।

मैसैया बड़े ही प्रेमपूर्वक अपनी वस्तु को सेठजी के हाथों से लेते हुए अपनी पत्नी नरसम्मा को देता है। नरसम्मा अपने पति मैसैया के हाथों से अपने गले के मनकों का हार स्वीकार करते हुए, उस वस्तु को एक बार जाँच पड़ताल कर उन मनकों की गिनती करके देख लेती है जो संख्या में पचास तक रहते हैं। उन मनकों को बड़ी ही सावधानी के साथ अपनी थैली में रख लेती है, फिर उस थैली को अपनी कमर में खोस लेती है। अब दोनों पति-पत्नी मिलकर निराशाओं से दुःखी मन अपने घर को वापस जाते हैं, उनको इस बात का दुःख हो रहा है कि एक सौ पचास रुपये सेठ से कर्ज लिए थ, उसको अब दो-सौ चालीस रुपये देना पड़ा।

एकदम नौवद रुपये अपने कर्ज का सूद हो गया, अब एक पैसा भी नरसम्मा की थैली में नहीं बचा हैं, दोनों पति-पत्नी निराशा भरे चेहरे लेकर आपस में बातचीत करते हुए अपने घर को पैदल ही चले जा रहे थे। उनके चेहरे पर नज़र डालकर देखते ही ऐसा अनुमान हो रहा था कि, कोई डाकुओं की टोली आई और अचानक इन पर हमला करके, इनका सब कुछ लूटकर चले गये हैं। वैसे ही संकट की घड़ी से मैसैया और नरसम्मा को सेठ लूट चुका था।

अब सेठजी नये व्यक्ति की ओर नज़र दौड़ाते ही वह व्यक्ति सेठ का चेहरा देखते ही, अपने दोनों हाथों को जोड़-कर रामराम सेठजी कहते हुए अपनी लाई हुई वस्तुओं को उनके सामने रखते हुए कहता है कि, सेठजी जरा मुझे जल्दी भेज दीजिए। आपकी बहुत मेहरबानी होगी। उस व्यक्ति

की बातों को सुनकर सेठजी कहते हैं कि, इतनी जल्दी है तो तुझे ले जा कहीं और, तेरे से पहले भी दूसरे कई लोग मेरे यहाँ बैठे हैं, उनको नको देखू क्या ? इस प्रकार अपना क्रोध प्रकट करते हुए सेठजी अपनी कृपा दृष्टि रामू की ओर डालते हुए, कहते हैं हाँ, इधर ला क्या लाया है आज ! सेठजी के इस प्रकार पूछते ही रामू जो बहुत देर से थका मांदा बैठा हुआ था, उसके शरीर में बिजली की-सी तेजी उत्पन्न हो गई और वह तपाक से अपने हाथ में रखे हुए अपनी पत्नी केसर के कानों के करण फूलों को सेठजी के हाथों में थमा देता है। वह इस समय बहुत ही निराश है क्योंकि इससे पहले भी इसी सेठजी के यहाँ अपनी पत्नी केसर के गले के मनकों का हार गिरवी रख कर कुछ दिन पहले ही दो-सौ रुपये ले गया था, उसको अभी तक भी नहीं छुड़ा सका है। उसकी मित्ती हर महीना दस रुपयों के हिसाब से बढ़ते ही जा रही है, और अब फिर से उसी सेठजी के यहाँ दूसरी बार कान के करण फूलों को रख रहा है। आज से इस वस्तु की भी सूद चालू हो जायेगी। पहले के दो सौ रुपये और अब के सौ रुपये लेने पर टोटल तीन सौ रुपयों का कर्जदार हो जायेगा ? उसका सूद हर महीना पन्द्रह रुपये बिना रुके मोटर गाड़ी की गति के समान बढ़ता ही जायेगा। उसके बढ़ने की चाल को भगवान भी नहीं रोक सकेगा। वैसे भी सेठजी की ली हुई रकम का सूद भी कुछ दिनों में बढ़ते-बढ़ते असल रकम से व्याज अधिक हो जायेगा।

सेठजी रामू के दिये हुए सोने के करण फूलों को अपने हथेली में रख कर उसे खूब परखते हुए, सोना घसने की कसौटी पर घस कर उसका पीला रंग देखने के उपरान्त जब उनको पूर्ण सन्तोष हो जाता है, तभी अपने दायें हाथ के बाजू में रखे हुए टिन के गोल नुमा डिब्बे को खोल कर उसमें से एक छोटा-सा पीतल की धातू से बना हुआ धर्मकाँटा निकाल कर उन करण फूलों को तौल कर देखते हैं, उसके उपरान्त ही रामू से पूछते हैं कि हाँ, बोल तुझे कितने रुपये इस समय चाहिए ?

सेठजी इस प्रकार प्रश्न कर पूछते ही रामू तपाक से कहता है, मुझे एक सौ रुपये चाहिए सेठजी। रामू के इस प्रकार कहते ही सेठजी अपनी रसीद बुक बाहर निकाल कर उस पर उसका नाम पता, वस्तु, रुपये, महीना तारीख आदि लिखने के उपरान्त रामू से पूछते ही वह सब कुछ ठीक-ठीक बता देता है, जिसकी पूर्ति अपने रसीद-बुक के कागज पर पूर्ण नियमानुसार करने के उपरान्त ही, रामू को हस्ताक्षर करने के लिए कहते हैं, तब रामू अपने मन में यह सोचता हुआ उठता है कि मैं अगर थोड़ा भी पढ़ा लिखा होता तो पेन से इस कागज पर अपना नाम लिख सकता था, लेकिन मुझे लिखना ही नहीं आता तब कैसे लिखूँगा।

मुझे पढ़ना लिखना ही नहीं आता सेठजी, मैं आपकी रसीद पर स्याही से अंगूठा लगा देता हूँ। रामू के इस प्रकार कहते ही सेठजी झट से अंगूठे पर लगाने वाली स्याही की डिबियाँ को खोलकर उसके सामने रख देते हैं, और रामू के

सीधे हाथ के अंगूठे को अपने हाथ से पकड़ कर उस डिबिया पर रखी हुई स्याही की गद्दी पर अंगूठे को दबाकर उसी अंगूठे को रसीद पर उतार देते हैं।

उसके उपरान्त सेठजी अपनी तिजोरी को खोलकर उसमें रखी हुई नोटों की गड्डी को बाहर निकाल कर, उसमें से चौरानवे रुपये दो बार गिनने के उपरान्त रामू के हाथ में थमा देते हैं। रामू उन नोटों को निराश मन से अपने हाथों में लेता हुआ दो बार गिनने के उपरान्त सेठजी से पूछता है, क्या सेठजी एक सौ रुपये मुझे चाहिए बोलने के उपरान्त भी आपने मुझे इस समय छः रुपये कम ही दे रहे हैं।

रामू के इस प्रकार क्षोभ प्रकट करने पर सेठजी भी क्रोधपूर्वक अपने चेहरे को लाल रंग का करते हुए कहते हैं, अरे मैं तुझे कई बार जता चुका हूँ मैं कभी भी एक महीने का सूद पेशगी काट कर ही देता हूँ। उसी प्रकार इस बार भी मैंने पाँच रुपये एक महीने का पेशगी सूद एवं एक रुपया कागज की लिखवाई का मिलाकर टोटल छः रुपये ही तो हिसाब से लिया हूँ ना। अब तू हिसाब लगा कर देख ले तुझे एक सौ रुपये बराबर पहुँचे या नहीं, अब भी समझा क्या नहीं समझा ?

ये क्या सेठजी मुझे सौ रुपयों की सख्त जरूरत थी, मैं आपको पहले ही कह चुका था फिर भी आपने छः रुपये कम ही दिये हैं, ठीक है सेठजी अब मैं चलता हूँ, रामराम कहता हुआ रामू अपनी चिन्ताओं और परेशानियों में डूबा हुआ तेजी से अपने व्यापार के लिए सीताफलों की मण्डी में जाता

है। और वहाँ कई बंडियों के माल को ऐसे परख कर देखता है, जैसे कोई जौहरी हीरे, मोतियों को देखता है अन्त में एक बण्डी सीताफलों की एक सौ तीस रुपयों में तय करके, उस बण्डी वाले से कहता है कि जल्दी से अपनी बण्डी बाँधकर मेरे घर को चल।

जैसे ही रामू से अपना भाव तय होते ही सीताफलों की बंडीवाला अपनी बंडी बाँधने की तैयारी शुरू करता है, वह झट से अपने दोनों बैलों को जो अब तक एक स्थान पर बैठ कर चारा खा रहे थे, रात भर चल कर आने के कारण काफी थके मांदे थे। उन बैलों की रस्सियों को अपने बंडी के पहियों से खोल कर जो अब तक पहियों को बाँधे हुए थे, झट से बिजली की-सी वेग से उन्हें पानी पिलाने के लिए पानी के हौज के पास ले जाकर खड़े कर देता है, रात भर के थके-मांदे दोनों बैल भी बेचारे पानी को अपनी आँखों के सामने दिखाई देते ही झट से अपना मुँह उसमें डूबो कर पानी पीना शुरू कर देते हैं। जैसे कोई दिन भर का भूखा व्यक्ति अपने सामने खाना रखा हुआ दिखते ही उस खाने पर इधर-उधर देखे बिना ही भूखे सिंह के समान खाना शुरू कर देता है। वैसे ही इस समय यह दोनों बैल बेचारे भी इधर-उधर देखे बगैर ही खूब जमकर अपनी प्यास बुझाते हैं। अब फिर से उन्हें अपने मालिक का लाया हुआ बोझ ढोते हुए अपने मालिक के संग आगे की मंजिल पर पहुँचाना होगा।

जब बंडी पर रास्ते से गुजरते समय हमारी एक नज़र सहसा पड़ते ही ऐसा मालूम पड़ता है कि बंडी बहुत ही

पुरानी-सी है, उसके उपरान्त उस बंडी को लेकर चलने वाले बैलों पर एक नज़र पड़ते ही एक बैल लाल रंग का बहुत हृष्ट-पुष्ट और सुन्दर है, दूसरा काले रंग का है, दोनों ही बैल उम्र से अधेड़ अवस्था के हैं। उन दोनों बैलों की आँखें एकदम चमकदार एवं सुन्दर हीरों के समान मोटी-मोटी-सी है, लेकिन इन दोनों बैल बेचारों पर अधिक भार होने के कारण ऐसे दिखाई दे रहे हैं, जैसे ये बहुत थक गये हैं और जल्द से जल्द अपनी मंजिल पर पहुँचना चाहते हैं।

जैसे गरीब के बच्चों को खाने के लिए न समय पर भोजन मिलता है और न ही उन्हें हृष्ट पुष्ट होने के लिए फल अथवा दूध-दही, घी आदि ही प्राप्त होता है। यह नन्हें-नन्हें बच्चे वृक्ष के समान फलने और फूलने वाले बालकगण उनको शक्तिशाली भोजन नहीं मिलने के कारण यह होनहार बालक वहीं पर ठिठक से जा रहे हैं। वैसे ही यह दोनों बैल बेचारों को दिन-रात कड़ी मेहनत कर खून को पसीना बना कर बहाने के बाद भी उन्हें उनको अपने मालिक से खल्ली, चून्नी आदि शक्तिदायक विटामिन दाना नहीं मिलने के कारण, दिन पर दिन कमजोर होते जा रहे हैं। उनके शरीर पर एक नजर पड़ते ही उनकी सक्त हड्डियाँ बाहर से चमड़ी के होते हुए भी अलग नज़र आ रही हैं, कोई भी सहृदयी इन्हें गिन सकता है।

उन बैलों का मालिक जिसका नाम गोविन्दु नायक है, वह एक लम्बा-सा व्यक्ति है, जिसकी आयु कोई पचास वर्ष की होगी, रंग उसका गोरा है; शरीर उसका दुबला-पतला है, घुटनों के नीचे तक एक मोटी-सी मटमैली सफेद रंग की धोती

पहना हुआ है, ऊपरी भाग पर एक हरे रंग का कुर्ता है सर पर लाल रूमाल बाँधा हुआ है, मुख की शोभा उसकी बहुत सुन्दर है, मुँह पर बड़ी-बड़ी मूँछे उसका रंग कुछ सफेद एवं काला-सा है।

दोनों कानों में सोने की बालियाँ है, दोनों हाथों में दो मोटे-मोटे चाँदी के कड़े हैं, उसका चेहरा एकदम हँसमुख है। वह पूरी रात बंडी चलाने के कारण रात भर का थका-माँदा है, फिर भी वह रामू के साथ उसके सीताफलों का व्यापार तय होने के कारण अपने माल की झटपट बिक्री के कारण खुशी में उसकी रात भर की थकान भाग जाती है। उसे अपने लाये हुए सीताफलों से एक सौ तीस रुपये प्राप्त होने वाले हैं, उसी खुशी में उसकी सारी रात की थकावट भाग जाती है, और उसमें एक नई फूर्ती आ जाती है, जैसे वह हवाई जहाज के समान तेजी के साथ अपनी बंडी को रामू के घर ले जाना चाहता है, उसके लिए ही अपने दोनों बैलों को एक बार अपने हाथ सहलाकर उनके शरीर की मालिश कर उनकी थकान को दूर करना चाहता है। जैसे कोई सईस थके हुए घोड़े को गाड़ी से खोल कर उसे मुलायम जमीन पर ले जाकर खड़ा कर देता है, तभी घोड़ा अपने मालिक की इच्छाओं का आदर करते हुए, उस मुलायम जमीन फो देखते ही अपने शरीर को जमीन के हवाले कर उस मिट्टी में कुछ देर छोटे बालक के समान लोट-पोट करते हुए अपनी सारी थकान को दूर कर लेता है, और कुछ ही देर में वापस जमीन से उठ कर खड़ा हो जाता है एवं अपने सारे शरीर को एक बार

अपनी पूरी शक्ति लगा कर झटका देता है, उसमें जो अब तक थकावट-सी थी वह सारी थकावट बिजली के समान झट से गायब हो जाती है, और उसमें एक नई शक्ति पुनः प्राप्त हो जाती है, वैसे ही यह गोविन्दु बडीवाला अपने बैलों पर हाथ फेरते ही उन दोनों बैलों की रात भर की थकावट दूर होकर एक नई शक्ति उनमें वापस आ जाती है।

वह दोनों बैल फिर से एक बार नई शक्ति प्राप्त कर अपने मालिक के हाथ फेरते ही, फिर से अपने कमजोर कन्धों को ऊपर उठाकर अपनी बंडी खिचने के लिए तैयार हो जाते हैं। वैसे ही गोविन्दु नायक अपने बंडो का मोरा ऊपर उठा कर अपने दोनों बैलों की गर्दन पर रखने के उपरान्त, उन बैलों के गले में चमड़े के पट्टों से ऊपर बाँध देता है। उसके उपरान्त उस मोरे की लकड़ियों के दोनों बाजू जो दो सुराख होते हैं उन सुराखों में भी लकड़ी के गातों को चढ़ा देता है, अब बंडी चलने के उपयुक्त हो गई है, अब गोविन्दु नायक के दोनों बैल अपने मालिक के इशारे का इन्तजार कर रहे हैं, जैसे कोई दो बालक स्कूल में अपने ड्रिल मास्टर के कहने पर दौड़ने के लिए मैदान में खड़े हुए हैं, जैसे ही ड्रिल मास्टर की सिटी बजेगी वैसे ही यह बालक दौड़ पड़ेंगे, बस वैसे ही यह दोनों बैल बेचारे भी जानवर होते हुए सब इशारे से समझ जाते हैं, वह अपने मालिक के चलो बेटा बोलने का इन्तजार भर कर रहे हैं, गोविन्दु नायक भी रात भर का थका माँदा है, वह इस समय झट से कुछ याद आते ही, अपने कुर्ते की जेबक में हाथ डालकर एक बिड़ी को बाहर निकालता है,

और उसे बड़े ही प्रेम के साथ अपने मुख में रख लेता है, पुनः अपने कुर्ते की बाजू वाली जेबक में हाथ डालकर एक चमड़े की छोटी-सी थैली बाहर निकालता है, उस थैली की डोरी को खोलकर उसमें से एक चकमक नामक सोन का छोटा-सा टुकड़ा हाथ में पकड़ लेता है, पुनः उसी थैली में से कुछ रुई एवं एक छोटा-सा पत्थर निकालकर उसको अपने दायें हाथ की हथेली में पकड़ कर, सीधे हाथ से चकमक से पत्थर पर रगड़ते ही दो-तीन बार के प्रयत्न करते ही वह रुई जलने लगती है उस जलती हुई रुई को अपने मुख से थोड़ा और फूँक कर तेज आग पकड़ने के उपरान्त, उस जलती हुई को अपने मुख में रखी हुई बिड़ी के ऊपर रखकर उसके सुलगते ही अपने मुख से एक दो बार जमकर बिड़ी के कसों को खिंचने के उपरान्त वह बिड़ी एकदम तेज सुलगने लगती है, जैसे ही बिड़ी का धुआँ गोविन्दु नायक के मुख में पहुँचते ही उसके शरीर में जो अब तक एक प्रकार की थकावट-सी थी, वह अचानक गायब हो जाती है, और उसमें एक नई शक्ति उत्पन्न हो जाती है. अब वह बिजली के समान आगे की मंजिल पर जाने के लिए अपने दोनों बैलों को चल बेटा कहते ही, दोनों बैल बेचारे सारे बंडी के वजन को फूलों के समान हलका समझते हुए, बड़े ही फूर्ती के साथ बंडी को तेज गति से लेकर दौड़ना शुरू कर देते हैं।

जब बैल बंडी को लेकर तेज गति से चलने लगते हैं तब गोविन्दु नायक जो अब तक अपने बैलों एवं बंडी के साथ पैदल ही दौड़ रहा था, उनको कुछ मिनटों के लिए थोड़ा-सा

रोक कर दोनों बैलों के पीछे मोरे के एक कोने में अपनी कंबल बिछाकर आराम से बैठ जाता है ।

जैसे कोई राजा अपने रथ में सवार होकर अपने सारथी को इशारा करते ही वह अपने मालिक की आज्ञा का पालन करते हुए अपने घोड़ों को दौड़ाते हुए मन चाहे स्थान पर राजा के कहते ही रोक देता है । वैसे ही गोविन्दु नायक के इशारा करते ही उसके दोनों आज्ञाकारी बैल बेचारे अपने अपने कर्तव्य का पालन करते हुए आगे की मंजिल पर दौड़ते चले जा रहे हैं ।

जब गोविन्दु नायक की बंडी रास्ते से गुजर रही थी, उस समय उनके आस-पास से गुजरने वाले राहगिरों के कोप का भाजन बनना पड़ता है । गोविन्दु नायक को गाँव का व्यक्ति जानकर उसे अपने सामने से गुजरता हुआ देखकर उसको बीच रास्ते का पहाड़ समझते हुए, उसके सामने से जाने वाले रिक्शेवाले एवं सैकल वाले बड़े ही क्रोधपूर्वक अरे ओ बंडी वाले दीखरा नहीं रे, अरे आगे देख कर चला, क्या अन्धा हो गया दिन दिवाले, दिखाई नहीं दे रहा क्या, बढ़ा जल्दी आगे अपनी बंडी को । इस प्रकार के अपशब्द उस बेचारे गोविन्दु को कई लोगों से सुनना पड़ता है ।

बेचारा गोविन्दु नायक गाँव का गँवार आदमी जो ठहरा। वह कहाँ नगरवालों से कुछ कह कर अपने लिए उल्टी मुसीबत खड़ा कर लेगा, यही सोच-विचार कर वह बेचारा सभी लोगों की झिड़कियों को गुपचुप सुनता हुआ बिना किसी की बातों की परवाह किये बगैर अपने बैलों को हाँकता हुआ, सीताफल

मण्डी से दो मील का रास्ता तय करते हुए एक घण्टे में करीब दिन के एक बजे होंगे। देवल झामसिंग रामू के घर के पास पहुँच जाता है, और वहाँ अपनी बंडी को रोक कर बैलों से कहता है ठहर जा बेटा, कहते ही उसके दोनों बैल बेचारे राहत की साँस लेते हुए, चलो आज जल्दी ही हमारी मंजिल आ गई अब हमें कुछ देर के लिए आराम मिलेगा और अब हमारे भाग्य का मालिक जिसका साथ गोविन्दु नायक के भाग्य से जुड़ गया है, वह अब हमें बंडी से खोल कर हमें एक स्थान पर बाँध देगा, और हम पर अपना प्रेम प्रकट करने के लिए एक कड़वी का कट्टा खाने के लिए खोल कर हमारे सामने बिखेर देगा।

रामू जैसे ही सीताफलों की बंडी लेकर अपने मकान के सामने पहुँच जाता है, वैसे ही उसकी पत्नी केसर अपना खाना पकाना अधूरा छोड़ कर झट से रामू की लाई हुई बंडी के सामने पहुँच जाती है, जैसे कोई दो दिनों की भूखी प्यासी शेरनी अपना शिकार मिलते ही उस पर पूरी शक्ति के साथ टूट पड़ती है, वैसे ही यह मानव जाति की शेरनी केसर भी अपने जीविका को चलाने वाली वस्तू के आते ही उसके चेहरे पर मुस्कुराहट दौड़ आती है, वह जल्दी से अपने और बच्चों की रोटी का सहारा अपने रुके हुए व्यापार के फिर से चल पड़ने की खुशी में बंडी को देखते ही उसके मन में कई आशाओं की किरणें फूट पड़ती है।

झट से केसर अपने पति रामू का स्वागत करती हुई पूछ बैठती है कि क्या बात आज आने में आपने बहुत देर

लगा दी है। क्या भाव में ख़रीद कर लाये हैं आज सीताफलों को बंडी को, अपनी पत्नी की उत्सुकता को देखते हुए रामू उसका जवाब देता है, एक सौ तीस रुपयों में बड़े ही मुश्किल से समझा-बुझा कर लाया हूँ।

रामू का मकान आते ही, झट से गोविन्दु नायक बंडी वाला अपनी बंडी को रामू के घर के सामने रोक देता है, और झट से बंडी के मोरे पर से नीचे उतर कर दो ऊँची लकड़ियों के सहारे बंडी को टेका देकर खड़ा कर देता है, उसके उपरांत अपने थके माँदे दोनों बैलों को एक का नाम भिखिया और दूसरे का नाम झामिया रहता है, उन दोनों को अपना प्रेम जताने के लिए उनके शरीर पर अपना हाथ रख कर थोड़ी देर सहलाता है, फिर उन्हें अपनी बण्डी के सीधे बाजू के पहिए की बीच की लकड़ियों से बाँध देता है।

फिर झट से स्वयं गोविन्दु नायक पहिये के ऊपर अपना पैर रख कर बण्डी के ऊपरी भाग पर चढ़ जाता है, और वहाँ से हरी-हरी घास का गट्ठा निकाल कर नीचे फेंकने के उपरान्त स्वयं बण्डी से नीचे उतर कर उसे हरे घास के कट्टे की गाँठ खोल कर बड़े ही प्रेमपूर्वक अपने दोनों बैलों के सामने बिखेर देता है, और स्वयं भी थोड़ा सुस्ता लेने के लिए अपने कुर्ते के जेबक में से एक बीड़ी का कट्टा निकाल कर उस कट्टे में से एक बीड़ी लेकर वापस बीड़ी के कट्टे को जेबक में रख लेने के उपरान्त उस बीड़ी को बड़े ही प्रेमपूर्वक मुख में रख कर उसके बाजू में खड़े रामू के पास से माचिस लेकर बीड़ी को सुलगा लेने के उपरान्त माचिस को वापस

कर देता है, कुछ देर तक बीड़ी को पीने के बाद गोविन्दु नायक के सुस्त शरीर में एक नई शक्ति वापस आ जाती है, और अब वह एक नई फुर्ती के साथ अपनी सीताफलों की बण्डी को खाली करने के लिए बण्डी के ऊपर चढ़कर सीताफलों को टोकरी में भर-भर कर रामू की पत्नी केसर को हाथों में थमाते रहता है, केसर अपनी सहायता के लिए अपने दोनों बच्चों को भी आवाज देकर बुलाती है, उस समय यह दोनों बच्चे काँच की गोटियाँ खेल रहे थे, अपनी माँ की आवाज कानों में पड़ते ही यह दोनों बच्चे सुनकर भी अनसुना करते हुए अपने खेल में मग्न रहते हैं, तब केसर फिर एक बार थोड़ा जोर से आवाज देते हुए अरे ओ लल्लू, अरे ओ छोटू थोड़ा इधर आना कहते ही, यह दोनों नटखट बालक जो अब तक अपने खेल में दीवाने थे, झट से अपना गोटियों का खेल बन्द कर उन गोटियों को अपने नेक्कर के जेब में डालते हुए अपनी माँ के करीब हिरण के समान तेज दौड़ते हुए पहुँच जाते हैं।

घर के आँगन में आते ही रामू के दोनों बेटे लल्लू और छोटू क्या बापू सीताफलों की बण्डी खरीद कर लाये हैं, अम्मा ? इस प्रकार प्रश्न पूछते ही केसर उत्तर में जवाब देती है, हाँ, उसके लिए ही तो मैं जल्दी बण्डी खाली करने के लिए तुम दोनों को कितनी देर से बुला रही हूँ, हाँ, कहो अम्मा हम क्या करें ?

अपने पिता द्वारा आज कई दिनों के बाद पुनः सीताफलों की बण्डी खरीद कर लाने के कारण इन दोनों छोटे-छोटे बालकों को इतनी खुशी हो रही है जैसे इनको खाने के लिए

उनके पिता रामू ने मिठाई का डिब्बा ही खरीद कर उनके हाथ में लाकर थमा दिया हो।

उतने ही प्रेमपूर्वक अपनी माँ केसर से फिर एक बार आग्रह करते हुए लल्लू और छोटू कुछ काम करने की इच्छा प्रकट करते ही, केसर भी कुछ काम जल्दी निपटने की नियत से अपने दोनों बालकों के सर सीताफलों के गम्पे रखते ही, यह दोनों बालक उम्र में छोटे होते हुए भी बड़े आदमियों के समान वजन को बरदाश्त करते हुए एक-एक टोकरा जल्दी-जल्दी सर पर ढोते हुए अपने घर के एक कोने में ला-ला कर उतार कर गम्पों को खाली कर पुनः फिर-फिर केसर की सहायता में जूट जाते हैं।

उन दोनों बालकों की आयु पर ध्यान जाते ही हमें ऐसा अनुभव होता है कि क्या लल्लू और छोटू जिनकी आयु इस समय दस और बारह वर्ष की होगी क्या यह बालक इस काम को करने के योग्य है? नहीं। लेकिन यह गरीब होने के कारण, इनकी गरीबी ही इन दोनों बालकों से काम करवा रही है। इनके चेहरे उदास हैं, इनके चेहरों से भी अधिक इनके शरीर पर कपड़े स्वयं अपनी आप-बिती सुना रहे, घुटनों तक ऊँची काले रंग की नेक्कर, उस पर आधे अस्तिनों वाले सफेद रंग के बुशर्ट पहने हैं। इनके इस सफेद कुर्तों में कुछ सुराखें भी साफ नज़र आ रही हैं, जैसे काले आकाश में तारे चमकते हैं वैसे ही, इन सफेद कुर्तों में से इनका भीतरी शरीर का काला-काला भाग दिखाई पड़ता है, इनका रंग साँवला-सा है, शरीर इनका दुबला-पतला है, सर पर बाल

लम्बे-लम्बे से हैं, उनके बालों के आकार को देखते ही कोई भी सहृदयी अनुभव कर सकता है कि, कई दिनों से इनको सर पर तेल लगाना नसीब नहीं हो रहा। इतना सब कुछ होते हुए भी यह दोनों बालक बिना किसी चिन्ताओं के मस्त हथिनी के बच्चों के समान अपनी माता का दिया हुआ वजन आपस में आधा-आधा बाट ले रहे हैं।

इनको न ही अच्छे कपड़ों की चिन्ता है और न ही नये जमाने के फैशन की चिन्ता है, इनको बस दो टाईम का रूखा-सूखा खाना चाहिए, और अपने माँ-बाप के लाये हुए फटे पुराने कपड़े ही पहन कर बड़े ही आनन्द के साथ अपने दिन गुजारते हुए जी रहे हैं।

केसर अपने पति की लाई हुई सीताफलों की बण्डी को गोविन्दु नायक से कुछ ही देर में खाली करवा लेती है, सारे बण्डी का माल बहुत ही अच्छा रहता है, उसे अच्छा माल प्राप्त होने के कारण आज बहुत प्रसन्नता हो रही है, उसे अपना माल आज जल्दी बिकने की आशा है।

जैसे किसी माँ को अपनी खूबसूरत एवं रूपवान बेटी होने के कारण उसका वर अपने आप जल्दी आने की आशा मन में लगी रहती है, वैसे ही केसर को अपने सुन्दर सीताफलों के बहुत ही जल्दी बिक जाने की आस मन में बनी रहती है। उसकी आधी भूख-प्यास आज के नये माल को देखते ही मारे सन्तोष के अपने आप भर जाती है, इस नये माल के कारण केसर के शरीर में आज एक नये प्रकार की शक्ति अपने आप आ जाती है। झट से फिर एक बार

अपने पति रामू द्वारा लाये हुए सीताफलों को अपनी आँखों से निहारती हुई, अपना एवं अपने बच्चों के पेट की आग बुझाने की याद आते ही, चूल्हे के पास आकर बचे हुए बाकी काम को करने में जुट जाती है।

गोविन्दु नायक अपने माल को खरीददार के हवाले करके अब निश्चिन्त होकर, अपने पेट की आग मिटाने के लिए झट से बण्डी पर से नीचे उतर कर पानी के नल पर जाकर थके हुए शरीर को गंगाजल के द्वारा स्वच्छ कर लेता है, और वापस होते समय एक सिलवर के लोटे में पानी भर लेकर अपने बण्डी के नीचे आकर अपनी कंबल बिछा कर बैठ जाता है। उसके उपरान्त खाना खाने की नियत से बण्डी के नीचे भाग में बाँध कर रखे हुए खाने की टोकरी की रस्सियों को खोल कर गम्पे को बाहर निकाल कर अपने कंबल पर रख देता है।

उसके उपरान्त अपनी जीवन संगिनी द्वारा प्रेमपूर्वक बाँध कर दी हुई, खाने की पोटली उस टोकरी में से बाहर निकाल कर उसके कपड़े को खोल कर देखते ही उसमें तीन-चार पीली जवारी की रोटियाँ और कच्ची इमली की चटनी उसके साथ में दो मोटी-मोटी प्याज की डल्लियाँ रहती हैं, उसमें से एक रोटी गोविन्दु नायक अपने हाथ में लेकर उस रोटी पर थोड़ी-सी चटनी परोस कर अपने पेट की आग बुझाना शुरू कर देता है, अपनी थकावट दूर करने की इच्छा से अब तक जो उखड़ बैठा हुआ था, अब अपने दोनों पैरों को थोड़ा मोड़ कर बिना कुछ संकोच के ही धरती माँ की गोद में

आलती-पालथी मारकर बड़े ही प्रेमपूर्वक बैठ कर एक-एक कौर सूखी रोटी का टुकड़ा चटनी लगा कर खाते जाता है, और उस पर प्याज की एक-एक फाँक भी खाते रहता है।

रात भर का थका-माँदा भूख से व्याकुल एक-एक रोटी के टुकड़े को ऐसे चबाकर खा जाता है, जैसे करंट की गिरनी में जवारी को डालते ही कुछ ही मिनटों में सारी जवारी का आटा बनकर वापस बाहर आ जाता है, वैसे ही गोविन्दु नायक भी अपने मुख में रोटी का टुकड़ा रखते ही अपने बत्तीस दाँतों से ऐसे चबाते रहता है जैसे यह मनुष्य के साधारण दाँत नहीं आटे की गिरनी के दो पाट ही हैं। गोविन्दु नायक इस समय भूखे शेर के समान व्याकुल-सा था, देखते ही देखते एक के बाद एक तीन रोटियाँ और दो प्याज की डल्लियों को कुछ ही मिनटों में साफ कर देता है। उसके उपरान्त पानी के लोटे को हाथ से उठा कर मुख से पीना शुरू कर सारे पानी को एक ही बार भरपेट अपनी प्यास बुझाने के उपरान्त ही थोड़े से पानी को अपने हाथों पर डाल कर हाथ धोने के उपरान्त, थोड़ा-सा पानी लेकर अपने मुख को भी साफ करने के उपरान्त ही थोड़ी शान्ति अनुभव करते हुए झट से उसकी नज़र अपने बाजू बैठे हुए उन दोनों बैलों पर पड़ते ही, गोविन्दु नायक के मन में ऐसा अनुमान होने लगता है कि जैसे कोई पिछले जन्म में यह तीनों बाप बेटे होंगे।

लेकिन आज गोविन्दु मानव जन्म में इन दोनों बैलों का मालिक बन कर उस सम्बन्ध को पुनः निभा रहा और बेचारे ये दोनों बैलों का जन्म पाकर भी अपना पुराना कर्ज उसके

साथ ही बेटों के रूप में अपने मालिक के साथ चुका रहे हैं ।

गोविन्दु के खाना खा लेते ही रामू उसे बड़े ही प्रेमपूर्वक अपने पास बुलाकर सामने ही फर्श पर बैठ जाने के लिए कहता है, और उसके बैठते ही अपनी जेब से एक बादाम छाप बीड़ी निकाल कर उसको पीने के लिए थमा देता है, जैसे कोई बड़े ही प्रेमपूर्वक सचमुच में कुछ बादाम ही दे रहा है ?

ऐसा समझते हुए गोविन्दु नायक अपने ग्राहक रामू से वह बीड़ी लेकर अपने मुख में रख लेता है, तब झट से रामू अपने जेबक में से माचिस निकाल कर उस माचिस की पीठ पर एक काड़ी को रगड़ते ही उस काड़ी की गंधक जलने लगती है, उस जलती हुई काड़ी की आग से गोविन्दु नायक अपनी बीड़ी को सुलगा कर अपनी सारी थकान मिटा कर फिर से रेल के इंजन के समान नई शक्ति बीड़ी की अपने गले के मार्ग के द्वारा अन्दर तक उसकी नसों को खींच कर सारे शरीर में एक नई शक्ति प्राप्त कर लेता है ।

जब गोविन्दु नायक बीड़ी पीते हुए अपनी थकावट और कुछ चिंता को भूला रहा था, तभी रामू आज के लिए हुए सीताफलों की तारीफ करता हुआ प्रसन्न मन से अपनी जेबक में से एक सौ तीस रुपये निकाल कर गोविन्दु नायक के हाथों में थमा देता है ।

उन रुपयों को स्वीकार करते हुए गोविन्दु नायक अपनी दो दिनों की कड़ी मेहनत की पूँजी को एक बार बड़े ही सावधानी पूर्वक गिनने के उपरान्त ही अपनी धोती के छोर में

रखकर एक दो गाँठें बाँधने के बाद ही वापस उस धोती के छोर को अपनी कमर में बाँध लेता है। उसके उपरान्त रामू को कहता है, बाबूजी पूरे एक सौ तीस रुपये हैं, अब मैं थोड़ा बाजार जाकर घर के लिए कुछ सौदे और बच्चों के लिए कुछ मौज आदि खरीदकर ले आता हूँ। बापू कहता हुआ उस स्थान से उठकर अपने बण्डी के करीब जाकर थोड़ा-सा चारा निकाल कर अपने बैलों के सामने डालकर मैं बाजार जाकर अभी आता हूँ बाबुजी, थोड़ा मेरी बण्डी की ओर ध्यान रखना। ऐसा कहते हुए बाजार को चल पड़ता है, वहाँ अपनी पत्नी के कहे अनुसार जरूरत की सभी वस्तुएँ खरीद कर वापस अपनी बण्डी के पास आ जाता है। बण्डी के पास आते ही अब वापस अपने गाँव जाने की चिंता में झट से अपने दोनों बैलों को चलो बेटा अब अपने गाँव जायेंगे कहते ही उसकी बोली के अर्थ को समझते हुए दोनों बैल बेचारे झट से उठ कर खड़े हो जाते हैं, उन बैलों को बण्डी के मोरे से बाँध कर जाने से पहले रामू और उसकी पत्नी केसर को चलते बाबुजी चलते बहन जी कहता हुआ, बैलों को थोड़ा-सा दुम को हिलाते हुए चलो बेटा घर चलेंगे बोलते ही गोविन्दु नायक के दोनों बैल एकदम बिजली के समान तेज गति से बण्डी को खिचते हुए घर के रास्ते पर निकल पड़ते हैं।

गोविन्दु नायक के जाते ही, रामू, केसर और बच्चे एक साथ एक ही पंगत में बैठकर भोजन बड़े ही आनन्द पूर्वक करने के उपरान्त सायकल के चार पहियों वाली बण्डी पर जिसे ठेला भी कहते हैं, आज लिए हुए माल को बहुत ही

सुन्दर ढंग से अलग-अलग साईज वाले सीताफलों को ऐसे सजाते हैं, जैसे कोई हलवाई अपने दुकान में कई प्रकार की मिठाइयों को अलग-अलग थालियों में सजाकर काँच की अलमारियों में चाँदी के वरक लगाकर रखता है, वैसे ही रामू और केसर भी बड़े साईज के सीताफलों को सामने की पंक्ति में जमाकर रखते हैं, उसमें भी ऊपरी भाग पर बड़ी-बड़ी आँखों वाले फलों को रखने के उपरान्त उसके पीछे मध्यम श्रेणी के उसके पीछे छोटे-छोटे लड्डुओं के समान सभी सीताफलों को रखने के बाद बाजार निकलने से पहले, अपने बच्चों को घर की निगरानी के लिए सौंप कर, सीताफलों को बेच आने के उद्देश्य से दोनों पति-पत्नी बाजार में निकल पड़ते हैं ।

जब श्रीराम चौदह वर्ष के लिए वनवास की यात्रा पर जा रहे थे तब सीताजी भी उनके संग पति के दुःख-सुख में हाथ बँटाना ही पत्नी का धर्म समझते हुए ससुर के घर को त्याग कर चौदह वर्ष का पति संग वनवास भोगती है ।

वैसे ही रामू के संग उसकी प्रिय पत्नी केसर भी घर के सुख को त्याग कर रामू के कष्ट को कम करने के उद्देश्य से उसके ही संग सीताफलों की बण्डी को ढकेलते हुए बाजार में निकल पड़ती है । घर से निकलने के कुछ ही घण्टों में सारे के सारे सीताफल हाथों-हाथ बिक जाते हैं, एक स्थान पर वृक्ष की छाँव में खड़े होकर थोड़ा आराम लेते हुए आज की बिक्री का हिसाब जोड़कर वापस अपने घर को चार बजे तक पहुँच जाते हैं ।

घर को आते ही पेट की भूख मिटाने के लिए खाने-पीने की सामग्री, चावल, आटा, दाल, ईमली, मिर्ची, टमाटे, आलू, लकड़ी, तेल, नमक, माचिस आदि खरीद लेते हैं. वैसे ही किराने वाले हीरालाल सेठजी को पहले के बाकी कर्ज में से बीस रुपये चुका कर वापस दोनों पति-पत्नी घर लौट आते हैं।

कुछ रोज तक इसी प्रकार वह दोनों पति-पत्नी आपस में मिलकर कभी सीताफलों का तो कभी दूसरे फलों का व्यापार करते रहने पर रोजाना बीस से तीस रुपयों तक की आमदनी होते रहती है, इतनी कड़ी मेहनत करने पर भी बड़े ही मुश्किल से दो समय का भोजन एवं बच्चों का मोटा कपड़ा स्वयं के कपड़े दवा-दारू आदि में ही सारी बचत की हुई पूँजी देखते ही देखते खर्च हो जाती थी।

बड़े ही मुश्किल से अगर किसी दिन तीस चालीस रुपये बचाकर रखते हो दूसरे दिन वह किसी-न-किसी खर्च में आ जाते थे, इतना कठिन परिश्रम करने पर भी उनको कभी-कभी एक आध दिन व्यापार मंदा चलने के कारण उनका मूल धन भी खर्च हो जाता था, ऐसे कठिन समय में उन दोनों पति-पत्नी को अपने घर का प्रतिदिन का खर्च चलाना कठिन हो जाता।

आज की जी तोड़ महँगाई का सामना करने के लिए कुछ बचा पाने की नियत से ये लोग अपने लिए और अपने दोनों बच्चों के लिए नये कपड़ों के स्थान पर जुमेरात बाजार से पुराने कपड़े ही खरीद कर अपने तन को ढँक कर उसी में प्रसन्नचित अपना जीवन बिता रहे थे।

जब भी इनका व्यापार बराबर नहीं चलता था ऐसे समय में रामू और केसर आधा पेट भोजन कर, बच्चों को भी रूखा-सूखा एक दो कौर कम खिलाकर अपने जीवन की नैया को आगे चला रहे थे।

ऐसे कठिन समय में रामू और केसर में कभी-कभी तकरार हो जाती थी, क्यों इतना कमाकर भी तुम मेरे गहने अभी तक छुड़ाकर नहीं लाते हो, क्या साहूकार को ही छोड़ बैठोगे ? जितना भी कमाते हो सब खाने पीने में और दारू पीने में ही उड़ा देते हो, फिर किस प्रकार गहनों को छुड़ाओगे अब तुम्हीं बताओ।

इस प्रकार आये दिन रामू और केसर के सुखी जीवन में उन गहनों की बात बीच में आते ही, उन दोनों पति-पत्नी के बीच में एक आग-सी लग जाती थी, और वह दोनों एक दूसरे से कुछ दिनों के लिए अलग हो जाते जैसे यह दोनों पति-पत्नी न होकर कोई अजनबी लोग है ऐसा आपस में इन दोनों का बर्ताव हो जाता था।

इस प्रकार की घटना से रामू बेचारा बहुत दुःखी हो जाता और वह नये सिरे से सोचने लगता कि मैं क्या करूँ आखिर इसमें मेरा क्या दोष है, मैं इतना परिश्रम करने पर भी अपनी जीवन संगीनी के गले की शोभा उसके गले का शृंगार सोने के मनके और कानों के करण फूलों को ही छुड़ा कर नहीं ला सकता हूं।

धिक्कार है मेरे एसे जीवन को जो मैं पुरुष कहलाता हूँ, यही क्षोभ उसके मन एवं मस्तिष्क में भरा रहता है, इसी

चिन्ता में उसके चेहरे की मुस्कुराहट सदा के लिए गायब हो जाती और वह ऐसे दुःखी रहता जैसे उसका सब कुछ लुट गया हो और वह इस दुःख से जैसे अन्दर ही अन्दर खोखला बनता जा रहा है, उसको चिन्ता रूपी कीड़ा हरदम खाये जा रहा है जैसे मजबूत लकड़ी को जब कोई कीड़ा अन्दर घुस कर खाता जाता है तब वह मजबूत लकड़ी अन्दर ही अन्दर खोखली बनते जाती है और एक दिन इतनी कमजोर हो जाती है कि उसे बिना कुल्हाड़ी के मारे ही हाथ का थोड़ा सा धक्का देते ही वह चूरा-चूरा हो जाती है, वैसे ही रामू को अपनी पत्नी केसर के गहनों की चिन्ता अन्दर ही अन्दर खाये जा रही थी।

न जाने हमारे देश में रामू जैसे और कितने ही करोड़ों ऐसे व्यक्ति होंगे जो रामू के समान ही कर्ज की घुटन में घुट-घुट कर अपनी साँसें ले रहे होंगे ? न जाने और कितने ही परिवारों का सुख चैन इसी प्रकार के गहनों को बेचने अथवा गिरवी रखने के चक्कर में बर्बाद हो जाते होंगे, उन सुखी परिवारों में आये दिन इन गहनों के कारण ही उनके शांत जीवन में अशांति की आग लग जाती होगी, इस अशांति की आग के सुलगते ही उन सुखी परिवारों में कुरुक्षेत्र के समान युद्ध क्षेत्र बन जाते होंगे, कई लोग इस प्रकार के कुरुक्षेत्र के युद्ध से भयभीत होकर अपनी चिन्ताओं से मुक्ति पाने के उद्देश्य से अपने प्राणों को भी त्याग देते हैं।

इधर रामू एक वर्ष तक भी रुपये नहीं जमा कर सका था, अपनी पत्नी के गहनों को सेठ के यहाँ गिरवी रख कर

जो तीन सौ रुपये कर्ज लाया था, उस कर्ज का सूद सैकड़ा पाँच रुपयों के हिसाब से दो वर्षों के उपरान्त असल रकम तीन सौ रुपये है तो, उसका सूद तीन सौ साठ रुपये हो जाता है इस प्रकार से रामू इस समय सेठजी को छः सौ साठ रुपये का बाकी कर्जदार बन जाता है। अन्त में और कुछ महीने देखते ही देखते बितते ही रामू उस कर्ज को नहीं चुका पाता असल रकम से सूद ही काफी बढ़ने के कारण उसको अब अपने गहनों के बारे में कुछ कहने का भी अधिकार नहीं रह जाता, तब वह वस्तु स्वयं सेठजी की हो जाती तब सेठजी उसे अपनी वस्तु समझते हुए प्रसन्नता पूर्वक बाजार में बेच आते हैं।

इधर रामू अपनी पत्नी केसर के गहनों को सदा के लिए सेठजी को अर्पण कर उन गहनों के नाम पर सदा के लिए पानी छोड़ देता है और अपने भाग्य को कोसता हुआ आखरी बार मन को दबाकर उसकी आस छोड़ देता है।

उधर सेठजी का ब्याज का चक्र और न जाने कितने ही हजारों नर-नारियों के गलों को काँटता हुआ तेजगति के साथ ऐसे घूमते रहता है, जैसे विष्णु भगवान के उँगली में का चक्र उनके एक इशारे पर सामने वाले व्यक्ति पर चलते ही उस पापी का सर धड़ से अलग कर वापस फिर से विष्णु जी की उँगली में आ जाता है, वैसे ही भारत के कितने ही करोड़ों लोगों का जीवन चन्द सेठों के चक्रव्यूह में फँस कर हमेशा के लिए समाप्त हो जाता है।

इस देश के सत्तर करोड़ नर-नारियों का जीवन आये दिन अपने जीवन की गाड़ी को चलाने के लिए कुछ न कुछ कम पड़ते ही रहता है, इस कारण यह मजबूर लोग हरदम सेठ-साहूकारों के जाल में फँसते ही रहते हैं। जब एक बार यह लोग इन सेठों के पिंजरों में बन्द होते ही फिर से बाहर निकलना मुश्किल हो जाता है, बहुत ही कम लोग इन पिंजरों से बाहर निकल पाते हैं, जो फँस जाते हैं उनके सुखी जीवन में अन्धकार ही अन्धकार छा जाता है।

इधर चन्द मुठ्ठी भर साहूकार लोग करोड़ों लोगों के द्वारा दिये हुए सूद से अपने लिए आलीशान बंगलों का निर्माण करवाते हैं, उन बंगलों के रंग रोगन में लाखों रुपये खर्च कर अपना रोब जमाते हैं, उन बंगलों में अपने लिए अपनी पत्नी के लिए अपनी लाड़ली सन्तान के लिए ढेर सारा साजों सामान एअर कंडीशन कमरे, मखमल के गद्दे चाँदी के पलंग, सोने के तोरण, विदेशी कारें, विदेशी शृंगार का सामान, विदेशी कपड़, विदेशी टी-वी, रेडियो और विडियो और न जाने क्या-क्या इकटठे कर लेते हैं ये लोग वही जाने।

इनके घरों में हरदम खुशियाँ ही खुशियाँ छाई रहती हैं। जब कोई शुभ कार्य होता है तब ये साहूकार लोग अपने मेहमानों के लिए मलाई, पुरी, बादाम की बर्फी, रसगुल्ले, जामुन, बिरयानी, मैदे की पुरी, विदेशी शराब, फिल्मी दुनियाँ के सितारों का नाच-गाना आदि करवाने में पानी के समान अपना रुपया खर्च करते हैं, ताकि इनकी सन्तान आराम के साथ अपने ससुराल में भी मखमली गद्दों पर सो कर राज कर सकें।

इधर भारत देश की सत्तर करोड़ जनता को हरदम कुछ न कुछ कम पड़ते ही रहता है। इनको दो समय की रूखी-सूखी रोटी भी समय पर नसीब नहीं होती, उनके बच्चों को बचपन में पीने के लिए एक पाव दूध भी बराबर नसीब नहीं होता, माताओं को तन ढँकने के लिए नया कपड़ा नसीब नहीं होता, कई नौजवानों को अपना पेट भरने के लिए कभी-कभी गहने ही नहीं बेचने पड़ते बल्कि अपने शरीर का खून बेचकर भी अपने पेट की भूख मिटाना पड़ता है।

दूसरी ओर इन गरीब लोगों के द्वारा बेचे हुए खून की बोतलों को, इस देश के मुट्ठीभर साहूकार लोग चन्द रुपयों में खरीद कर अपनी बीमार पत्नियों एवं अपाहिज सन्तानों को बचाने के लिए उनको हाथियों के समान हृष्ट-पुष्ट करने के लिए इस्तेमाल करते रहते हैं।

चन्द रुपयों की लालच में गरीब लोग अपना खून बेच-बेच कर आखरी में तड़पते हुए मर जाते हैं, तब उसी खून को सेठ लोग अपने शरीर में चढ़वा कर मारे मस्ती के डिस्को डाँस करते हुए क्लबों में सारी रात बिताते हैं।

भारत देश के सत्तर करोड़ नर-नारियों की सारी शक्ति दो समय की रोटी जुटाने में समाप्त हो रही है, वहीं पर इनके खून-पसीने की कमाई हुई सारी दौलत, चन्द मुट्ठीभर साहूकार लोग अपने तलघरों में अपने तिजोरियों में अपने पत्नियों के गहनों में लगा रहे हैं।

इन साहूकारों के साथ कुछ भ्रष्ट नेतागण और अफसर भी मिलकर उनको हरदम माला-माल बनाने में सहयोग करते हैं।

इधर जनता से कहते हैं कि हम तुम्हारी गरीबी मिटाएँगे, और उधर नेतागण एवं अफसरों की मिली भगत से ही साहूकार लोग चिट्ठी पर साल के बारह रुपये सूद के नाम पर साठ रुपये वसूल कर हाथियों के समान फूले जा रहे हैं।

इधर ग़रीब लोग ब्याज चुकाते-चुकाते उसकी चिन्ता में घुल-घुल कर मरते जा रहे हैं, शायद इस देश की अस्सी करोड़ जनता के भाग्य में यही एक सबसे सस्ती वस्तु मौत ही उसका परिणाम बन गई है।

इन मरने वालों की पीड़ा से दुःखी होकर एक दिन ऐसा भी आयेगा जब गरीबों का देवता जाग जायेगा तब सब पापियों को जड़ से उखाड़ देगा।

॥ समाप्त ॥



(श्री रामचरित मानस से)

गोस्वामी तुलसीदास जी के दोहे :-

बिनु सतसंग बिबेक न होई।
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई ॥
सत संगत मुद मंगल मूला।
सोइ फल सिधि सब साधन फूला ॥

भावार्थ :

सत्सङ्ग के बिना विवेक नहीं होता और श्री रामजी की कृपा के बिना वह सत्सङ्ग सहज में मिलता नहीं। सत्सङ्गती आनन्द और कल्याण की जड़ है। सत्सङ्ग की सिद्धि (प्राप्ति) ही फल है और सब साधन तो फूल है ॥ ४ ॥

सठ सुधरहिं सत संगति पाई।
पारस परस कुधात सुहाई ॥
बिधि बस सुजन कुसंगत परहीं।
फनि मनि समनिज गुन अनुसरहीं ॥

भावार्थ :

दुष्ट भी सत्सङ्गति पाकर सुधर जाते हैं, जैसे पारस के स्पर्श से लोहा सुहावना हो जाता है (सुन्दर सोना बन जाता

है) किन्तु दैवयोग से यदि कभी सज्जन कुसङ्गति में पड़ जाते हैं, तो वे वहाँ भी साँप की मणि के समान अपने गुणों का ही अनुसरण करते हैं (अर्थात जिस प्रकार साँप का संसर्ग पाकर भी मणि उसके विष को ग्रहण नहीं करती तथा अपने सहज गुण प्रकाश को नहीं छोड़ती, उसी प्रकार साधु पुरुष दुष्टों के सङ्ग में रहकर भी दूसरों को प्रकाश ही देते हैं, दुष्टों का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।) ॥ ५ ॥

बन्दउँ संत समान चित हित अनहित नहिं कोई।
अंजली गत सुभसुमन जिमि सम सुगंध कर दोई ॥

भावार्थ :

मैं सन्तों को प्रणाम करता हूँ, जिनके चित्त में समता है, जिनका न कोई मित्र है और न शत्रु ! जैसे अञ्जलि में रक्खे हुए सुन्दर फूल (जिस हाथ ने फूलों को तोड़ा और जिसने उनको रक्खा उन) दोनों ही हाथों को समान रूप से सुगन्धित करते हैं (वैसे ही सन्त शत्रु और मित्र दोनों का ही समान रूप से कल्याण करते हैं) ॥ ३ (क) ॥

बन्दउँ नाम राम रघुबर को।
हेतु कृसानु भानु हिमकर को ॥
बिधि हरि हरमय बेद प्रान सो।
अगुन अनुपम गुण निधान सो ॥

भावार्थ :

मैं श्री रघुनाथजी के नाम 'राम' की वन्दना करता हूँ, जो कृशानु (अग्नि), भानु (सूर्य) और हिमकर (चन्द्रमा)

का हेतु अर्थात् 'र' 'आ' और 'म' रूप से बीज है। वह 'राम' नाम ब्रह्मा, विष्णु और शिवरूप है। वह वेदों का प्राण है, निर्गुण, उपमारहित और गुणों का भण्डार है ॥ १ ॥

जान आदि कबि नाम प्रतापू।
भयउ सुद्ध करि उलटा जापू॥
सहस नाम सम सुनि सिव बानी।
जपि जेई पिय संग भवानी॥

भावार्थ :

आदि कवि श्री वाल्मीकि जी राम नाम के प्रताप को जानते हैं, जो उलटा नाम ('मरा', 'मरा') जपकर पवित्र हो गये। श्री शिवजी के इस वचन को सुनकर कि एक राम-नाम सहस्त्र नाम के समान है पार्वती जी सदा अपने पति (श्री शिवजी) के साथ राम-नाम का जप करती रहती हैं ॥ ३ ॥

(सियावर रामचन्द्र की जय)

